सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
Title Code : DELHIN28985.
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.parivahanvishesh.com

परिवहन विशेष

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

ऊँचाई पर वही पहुँचते है, जो बदला नहीं बदलाव लाने की सोच रखते है।

वर्ष 01, अंक 198, नई दिल्ली

शनिवार, 30 सितम्बर 2023, मूल्य ₹ 5, पेज 8

पीयूसी केंद्रों पर नहीं लगेगी कतार, प्रदूषण पर होगा वार, ऐसे ठिकानों की संख्या में होगा विस्तार

- परिवहन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि जिस तरह से वाहनों की संख्या में वृद्धि हो रही है, उसके मुकाबले पीयूसी केंद्रों का विस्तार नहीं किया गया है। इससे वाहन चालक पीयूसी के लिए घंटों लंबी लाइनों पर खड़े रहते हैं। ऐसे में परिवहन विभाग वाहन चालकों की सुविधा को लेकर कार्य कर रहा है।

संजय बाटला

परिवहन विभाग पॉल्यूशन अंडर कंट्रोल (पीयूसी) केंद्रों की संख्या बढ़ाने की योजना पर काम कर रहा है। इससे जहां प्रदूषण घटेगा, वहीं वाहन चालकों को भी जल्द प्रदूषण प्रमाण पत्र बनवाने में सहूलियत होगी।

नई दिल्ली। राजधानी में वाहन चालकों को वाहनों की प्रदूषण जांच कराने के लिए अब परेशान नहीं होना पड़ेगा। परिवहन विभाग पॉल्यूशन अंडर कंट्रोल (पीयूसी) केंद्रों की संख्या बढ़ाने की योजना पर काम कर रहा है। इससे जहां प्रदूषण घटेगा, वहीं वाहन चालकों को भी जल्द प्रदूषण प्रमाण पत्र बनवाने में सहूलियत होगी।

विभागीय सूत्रों का कहना है कि जल्द होने वाली आगामी बैठक में इस पर फैसला संभव है। परिवहन विभाग के मुताबिक, मौजूदा समय में 943 पीयूसी केंद्र संचालित किए जा रहे हैं। दिल्ली में 26 सितंबर तक 33.56 लाख पीयूसी प्रमाणपत्र जारी किए गए हैं। बता दें कि वर्ष 2022 में 50 लाख से अधिक पीयूसी प्रमाण पत्र जारी किए गए थे। सर्दियों में वाहनों से होने वाले प्रदूषण की रोकथाम के लिए पीयूसी करवाना अनिवार्य किया गया है। वाहनों से निकलने वाले प्रदूषण को लेकर काफी सख्ती बरती जा रही है।

परिवहन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि जिस तरह से वाहनों की संख्या में वृद्धि हो रही है, उसके मुकाबले पीयूसी केंद्रों का विस्तार नहीं किया गया है। इससे वाहन चालक पीयूसी के लिए घंटों लंबी लाइनों पर खड़े रहते हैं। ऐसे में परिवहन विभाग वाहन चालकों की सुविधा को लेकर कार्य कर रहा है। अधिकारियों ने बताया कि फिलहाल पीयूसी केंद्रों की संख्या 1200 करने की योजना है।

महंगी हो सकती है जांच

परिवहन विभाग ने पीयूसी की दर बढ़ाने की प्रक्रिया के लिए समिति का गठन किया है, जोकि मौजूदा दरों का मूल्यांकन कर जांच दर बढ़ाने के लिए प्रस्ताव तैयार करेगी। ऐसे में पीयूसी की जांच महंगी हो सकती है। मौजूदा समय में दोपहिया वाहनों की प्रदूषण जांच के लिए 60 रुपये, पेट्रोल चालित चारपहिया वाहन के लिए 80 रुपये और डीजल वाहन के लिए 100 रुपये देने होते हैं। इसके अलावा अलग से 18 प्रतिशत जीएसटी देना होता है। बीएस-6 वाहनों की वर्ष में एक बार और बीएस-4 वाहनों की हर छह माह में एक बार प्रदूषण जांच करानी होती है। बता दें कि वर्ष 2011 से पीयूसी की आखिरी बार जांच दर बढ़ाई गई थी।

10 हजार जुर्माने का प्रावधान

पीयूसी वाहन की जांच के बाद दिया जाने वाला प्रमाणपत्र है। वाहन का उपयोग करते समय पीयूसी सर्टिफिकेट को साथ रखना जरूरी है। इसका उद्देश्य बढ़ते वायु प्रदूषण को नियंत्रण में करना है। मोटर वाहन अधिनियम के अनुसार वैध पीयूसी प्रमाणपत्र के बिना पकड़े जाने पर वाहन मालिकों को छह महीने तक की जेल या 10 हजार रुपये तक का जुर्माना या दोनों का सामना करना पड़ सकता है। केंद्रीय मोटर वाहन नियम, 1989 के अनुसार प्रत्येक मोटर वाहन, जिसमें बीएस-एक, दो, तीन, चार के अनुरूप और सीएनजी व एलपीजी से चलने वाले वाहन शामिल हैं। इनके रजिस्ट्रेशन की तारीख से एक साल की अवधि समाप्त होने के बाद एक वैध पीयूसी प्रमाण पत्र ले जाना आवश्यक है। हालांकि, चारपहिया बीएस-चार वाले वाहनों के लिए वैधता एक वर्ष और अन्य के लिए तीन महीने है।

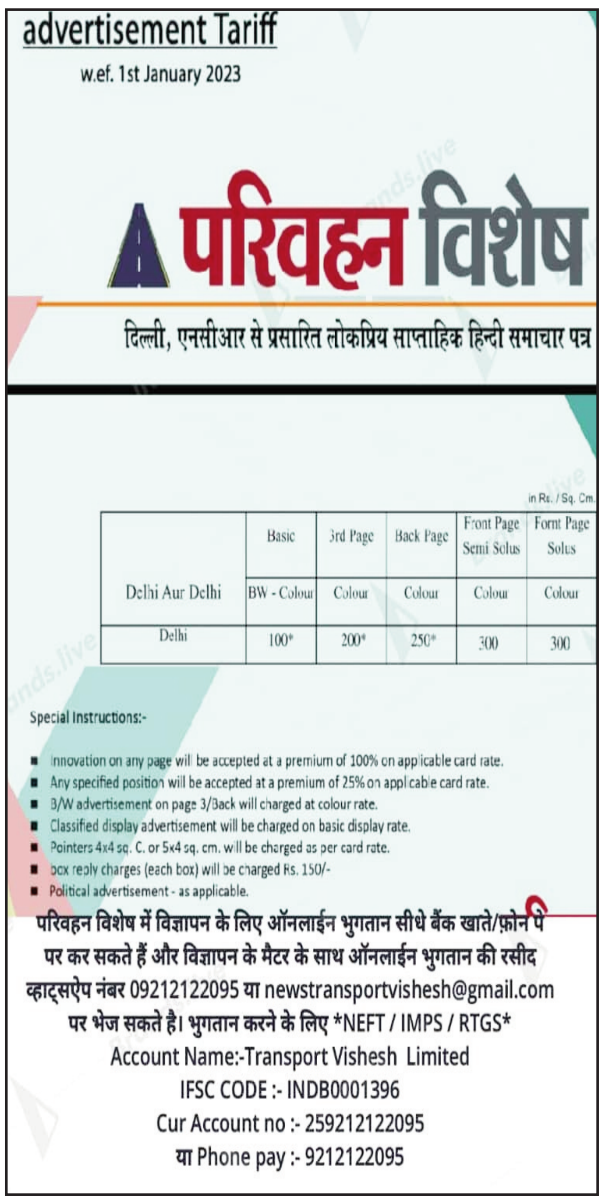
advertisement Tariff
w.ef. 1st January 2023

परिवहन विशेष
दिल्ली, एनसीआर से प्रसारित लोकप्रिय साप्ताहिक हिन्दी समाचार पत्र

in Rs. / Sq. Cm.

Delhi Aur Delhi	Basic	3rd Page	Back Page	Front Page Semi Solus	Fornt Page Solus
	BW - Colour	Colour	Colour	Colour	Colour
Delhi	100*	200*	250*	300	300

Special Instructions:-
- Innovation on any page will be accepted at a premium of 100% on applicable card rate.
- Any specified position will be accepted at a premium of 25% on applicable card rate.
- B/W advertisement on page 3/Back will charged at colour rate.
- Classified display advertisement will be charged on basic display rate.
- Pointers 4x4 sq. C. or 5x4 sq. cm. will be charged as per card rate.
- box reply charges (each box) will be charged Rs. 150/-
- Political advertisement - as applicable.

परिवहन विशेष में विज्ञापन के लिए ऑनलाईन भुगतान सीधे बैंक खाते/फ़ोन पे पर कर सकते हैं और विज्ञापन के मैटर के साथ ऑनलाईन भुगतान की रसीद व्हाट्सऐप नंबर 09212122095 या newstransportvishesh@gmail.com पर भेज सकते है। भुगतान करने के लिए *NEFT / IMPS / RTGS*
Account Name:-Transport Vishesh Limited
IFSC CODE :- INDB0001396
Cur Account no :- 259212122095
या Phone pay :- 9212122095

डिपो को मिलेंगी पांच नई बसें, सफर होगा सुहाना

परिवहन विशेष न्यूज

रायबरेली। परिवहन निगम के रायबरेली डिपो के बेड़े में जल्द ही पांच नई बसें शामिल होंगी। इन बसों को दिल्ली, बरेली, बनारस सहित अन्य बड़े रूटों पर संचालित करने की तैयारी है। नई बसों के मिलने के बाद यात्रियों का सफर और सुहाना हो सकेगा।

रायबरेली डिपो के पास वर्तमान समय में 155 बसें हैं। इसमें डिपो की 74 और अनुबंधित 81 बसों का संचालन विभिन्न रूटों हो रहा है। इसमें काफी बसें पुरानी हो गईं हैं। मरम्मत आदि पर खर्च अधिक आ रहा है। बीती फरवरी में डिपो को 10 नई बसें मिली थीं। इन बसों को दिल्ली, लखनऊ, कानपुर सहित अन्य बड़े रूटों पर चलाया गया था। अयोध्या के लिए सीधी बस सेवा आरंभ की गई है। वर्तमान समय में लखनऊ रूट पर करीब 80 और कानपुर रूट पर 30 बसें दौड़ रही हैं। प्रयागराज रूट पर नौ, प्रतापगढ़ मार्ग पर आठ और सुल्तानपुर मार्ग पर सात बसें चल रहीं हैं।

जिले के लोकल रूटों पर कई बसों का संचालन हुआ है। पांच नई बसें और मिलने के बाद विभिन्न रूटों पर बसों का और बेहतर ढंग से संचालन होगा। लखनऊ और रायबरेली के बीच लोगों का सबसे अधिक आवागमन होता है। इस रूट पर हर 20 मिनट में एक बस की सुविधा मिल रही है। नई बसों के मिलने के बाद इस रूट पर सफर और आसान होगा।

जरूरी रूटों को कवर करेंगे

डिपो को पांच और नई बसें मिलने की उम्मीद है। नई बसों को बड़े रूटों पर संचालित कराकर यात्रियों को बेहतर सुविधा दी जाएगी। उपलब्ध बसों के माध्यम से सभी जरूरी रूटों को कवर किया जा रहा है। - एमएल केसरवानी, एआरएम रायबरेली डिपो

सरकार की साल के आखिर तक राष्ट्रीय राजमार्गों को गड्ढा मुक्त बनाने की तैयारी, गडकरी ने किया एलान

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए एक नीति पर काम कर रही है कि साल के आखिर तक राष्ट्रीय राजमार्गों पर कोई गड्ढे न हों और बिल्ट-ऑपरेट-ट्रांसफर (बीओटी) मोड पर सड़कों के निर्माण को प्राथमिकता दी जा रही है क्योंकि ऐसी परियोजनाएं बेहतर तरीके से बनाए रखी जाती हैं।

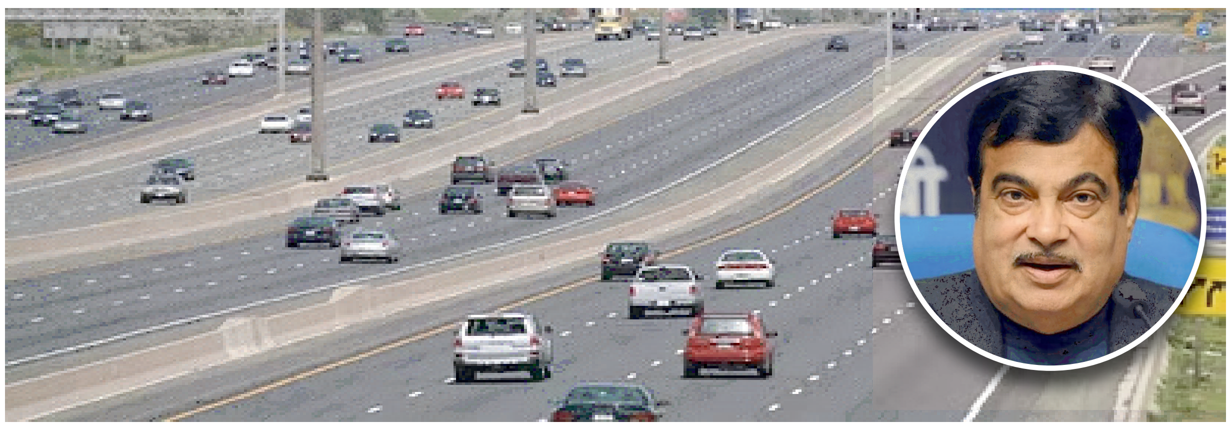

नई दिल्ली। सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए एक नीति पर काम कर रही है कि साल के आखिर तक राष्ट्रीय राजमार्गों पर कोई गड्ढे न हों और बिल्ट-ऑपरेट-ट्रांसफर (बीओटी) मोड पर सड़कों के निर्माण को प्राथमिकता दी जा रही है क्योंकि ऐसी परियोजनाएं बेहतर तरीके से बनाए रखी जाती हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा नितिन गडकरी ने गुरुवार को यह जानकारी दी।

इस साल दिसंबर के आखिर तक राष्ट्रीय राजमार्गों को गड्ढों से मुक्त करने के लक्ष्य के साथ, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय प्रदर्शन-आधारित रखरखाव और अल्पकालिक रखरखाव अनुबंधों को मजबूत कर रहा है।

आम तौर पर, सड़क निर्माण तीन तरीकों से किया जाता है - बीओटी, इंजीनियरिंग, प्रोक्योरमेंट एंड कंस्ट्रक्शन (ईपीसी), और हाइब्रिड एन्यूटी मॉडल (एचएएम)। ईपीसी मोड के तहत जो सड़कें बनाई जाती हैं, उन्हें काफी पहले से ही रखरखाव की जरूरत पड़ती है। जबकि बीओटी मोड के तहत, सड़कें बेहतर बनती हैं क्योंकि ठेकेदार जानता है कि उसे अगले 15-20 वर्षों तक रखरखाव की लागत वहन करनी होगी। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री ने अपने मंत्रालय की विभिन्न पहलों पर एक मीडिया ब्रीफिंग में कहा, ₹इसलिए हमने बड़े पैमाने पर बीओटी मोड के तहत सड़कों के निर्माण का फैसला किया है।₹

यह देखते हुए कि बारिश से राजमार्गों को नुकसान हो सकता है, जिसकी वजह से गड्ढे हो सकते हैं, गडकरी ने कहा कि मंत्रालय राष्ट्रीय राजमार्गों का सुरक्षा ऑडिट कर रहा है।

उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित करने के लिए एक नीति बनाई जा रही है कि राष्ट्रीय राजमार्ग गड्ढों से मुक्त हों और इस परियोजना को सफल बनाने के लिए युवा इंजीनियरों को शामिल किया जाएगा।

सड़क परिवहन और राजमार्ग सचिव अनुराग जैन ने कहा कि मंत्रालय ने 1,46,000 किलोमीटर की लंबाई वाले पूरे राष्ट्रीय राजमार्गों की मैपिंग कर ली है और इस साल दिसंबर तक गड्ढों को हटाने के लिए प्रदर्शन-आधारित रखरखाव और अल्पकालिक रखरखाव अनुबंधों को मजबूत कर रहा है। बीओटी परियोजनाओं में, निजी निवेशक 20-30 वर्षों की रियायती अवधि में राजमार्ग परियोजनाओं के फाइनेंसिंग, निर्माण और संचालन का जोखिम उठाते हैं। फिर डेवलपर्स यूजर चार्ज या टोल के जरिए निवेश की वसूली करते हैं।

ईपीसी परियोजनाओं में, सरकार राजमार्ग के निर्माण के लिए डेवलपर को भुगतान करती है जबकि टोल राजस्व सरकार को मिलता है।

दिल्ली मेट्रो में आखिर क्यों नहीं होता टॉयलेट, कारण है बड़ा ही मामूली लेकिन छू जाएगी ये एक बात

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली मेट्रो में आखिर शौचालय क्यों नहीं होते, कभी सोचा है आपने? बता दें, टॉयलेट की सुविधा स्टेशंस के अंदर दी जाती है, लेकिन मेट्रो के अंदर इन्हें नहीं बनाया गया है।

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो में आप रोज सफर करते होंगे, जाने वालों के अक्सर दिमाग में ये सवाल जरूर आता होगा, आखिर इसमें शौचालय क्यों नहीं है? हालांकि स्टेशंस पर यात्रियों के लिए कई टॉयलेट सुविधा बनाई गई है, लेकिन ये फैसिलिटी ट्रेन के अंदर क्यों नहीं है, ये कभी सोचा है? चलिए आज हम आपको इस लेख के जरिए बताते हैं, आखिर दिल्ली मेट्रो के अंदर टॉयलेट क्यों नहीं हैं।

मेट्रो में टॉयलेट ना बनाने का कारण

जैसा कि हमनें बताया यात्रियों के लिए स्टेशंस पर टॉयलेट बनाए गए हैं, लेकिन स्वच्छता के चलते इन्हें मेट्रो के अंदर नहीं बनाया गया है। इससे मेट्रो गंदी हो सकती है और लोगों के लिए सफर करना मुश्किल हो सकता है।

ये भी है एक कारण

एक कारण ये भी है, मेट्रो को एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन तक जाने में करीबन दो मिनट का समय लगता है, ऐसे में आप मेट्रो से निकलकर स्टेशंस का टॉयलेट यूज कर सकते हैं।

नहीं है कोई आधिकारिक बयान

हालांकि अभी इसका कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है, लेकिन अगर आप टॉयलेट का इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो बता दें, आपको हर स्टेशंस पर ये टॉयलेट सुविधा मिल ही जाएगी। हालांकि हर स्टेशन पर भी ये फैसिलिटी उपलब्ध नहीं है, तो ट्राई करने से पहले एक बार जरूर पूछ लें।

कई चीजों का रखें ध्यान

मेट्रो में सफर करने के दौरान कई चीजों का ध्यान रखें, जैसे मेट्रो में कई सामान ले जाने पर बैन लगाया गया है। साथ ही हाल में घोषणा की गई है कि अब आप मेट्रो में शराब की दो बोतल ले जा सकते हैं।

टैंपल'स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण रजिस्टर्ड

कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063, कॉरपोरेट

कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

आजादी के अमृतकाल में नारीशक्ति का जागरण बहुत सुखद संकेत है

बृजनन्दन राजू

राष्ट्र की आधारशक्ति नारी है। प्राचीनकाल में भारत में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी। नारी को उपनयन का अधिकार प्राप्त था। नारियां गुरुकुलों में जाती थी और उन्हें वेदों की शिक्षा दी जाती थी। राजाओं के राज्याभिषेक के समय रानियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी।

अमृतकाल में नये संसद भवन में प्रवेश करते ही महिलाओं को सक्षम बनाने के उद्देश्य से 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023' पारित कर भारत सरकार ने इतिहास रचने का काम किया है। निश्चित ही यह नये व विकसित भारत का प्रतिबिम्ब है। महिलाओं के लिए लोकसभा व विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण के विधेयक का सभी दलों ने एकजुट होकर समर्थन किया। महिलाओं के लिए यह गौरव का क्षण है। विधेयक के पक्ष में 454 और विपक्ष में मात्र दो वोट पड़े। यह भारतीय लोकतंत्र की महिलाओं के प्रति कृतज्ञता को दर्शाता है। महिला आरक्षण बिल के विरोध में एआईएमआईएम के असद्दुदीन ओवैसी व इम्तिआज जलीन ने ही वोट किया। इस बिल के विरोध में आने से उनकी मानसिकता उजागर होती है। ऐसे लोग महिलाओं को अपना गुलाम समझते हैं। वह उन्हें उपभोग की वस्तु समझते हैं।

जबकि भारत के अन्य दलों ने जिस प्रकार महिला सशक्कतीकरण के मुद्दे पर दुनिया को एकजुटता का संदेश दिया है। इससे भारत का मस्तक ऊंचा हुआ है। महिला आरक्षण बिल पिछले 27 वर्षों से लंबित था। 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद जनगणना और परिसीमन दोनों का काम शुरू हो जायेगा। इसके पूरा होने के बाद विधानसभा और लोकसभा के चुनाव महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों के साथ होंगे। सरकार इस विधेयक पर सुझावों को खुलेमन से स्वीकार करने को भी तैयार है। जरूरत पड़ने पर इसमें आवश्यक संशोधन भी किया जायेगा। स्वाधीनता के अमृतपर्व पर महलाओं को यह सुअवसर प्रदान करने के लिए राष्ट्र सेविका समिति, दुर्गा वाहिनी, वीरांगना वाहिनी ने भारत सरकार का अभिनंदन किया है। राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका शांतक्का ने भारत सरकार व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संसद व विधान सभाओं में महिलाओं को जो सुअवसर प्राप्त हो रहे हैं, यह महिलाओं के लिए गौरव का क्षण है। क्योंकि आज निश्चित ही महिलाओं के लिए आरक्षण की आवश्यकता है। जब से केन्द्र में मोदी की सरकार बनी है तब से महिलाओं के लिए अनेक योजनाएं बनाई गयी हैं। उन योजनाओं का लाभ महिलाओं मिल भी रहा है।

राष्ट्र की आधारशक्ति नारी है। प्राचीनकाल में भारत में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी। नारी को उपनयन का अधिकार प्राप्त था। नारियां गुरुकुलों में जाती थी और उन्हें वेदों की शिक्षा दी जाती थी। राजाओं के राज्याभिषेक के समय रानियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। धर्म व अध्यात्म के विषयों पर व पुरूषों से शास्तार्थ करती थीं। हमारे यहां महिला व पुरूष में भेद नहीं था। महिलाएं भी युद्ध कौशल में प्रवीण होती थीं और समरांगण में भी जाती थीं।

भारतीय नारी अबला नहीं सबला है। नारी शक्ति समाज को शुद्ध और प्रबुद्ध करने में सक्षम है। राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने समाज धारणा के लिए नारी की सुप्त शक्तियोंको आधार रूप माना है। हम देखते है की प्रत्येक कार्य में शक्ति अंतरनिहीत होती है। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था महिलाएं अपनी समस्याएं हल करने में खुद तो सक्षम हैं ही साथ ही समाज की समस्याओं को हल करने में अपना योगदान दे सकती हैं।

संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी भी कहते थे कि महिलाओं को केवल घर तक सीमित रखना ठीक नहीं है। श्रीगुरुजी स्त्रियों को शक्तिस्वरूपा मानते थे। वे कहते थे कि महिलाएं अपनी समस्याओं को सुलझाने में स्वयं सक्षम हैं। महिलाओं को अपने घर की चहारदीवारी से बाहर के समाज में भी अपने मातृप्रेम के वर्षा करनी चाहिए। समाज की निर्धन बहनों की सेवा का दायित्व भी माताओं पर ही है। बच्चों पर संस्कार डालने का काम माताओं का होता है। माता अपने बच्चों को वीरों के रूप में ढ़ाल सकती है। देश प्रेम व समाज सेवा की भावना भर सकती है। छत्रपति शिवाजी को शिवाजी बनाने में उनकी माता जीजाबाई का महान योगदान था।

राष्ट्रस्य सुदृढ़ा शक्ति समाजस्य च धारिणी।

भारते संस्कृते नारी,माता नारायणी सदा।।

अर्थात भारत में नारी शक्ति राष्ट्र को मजबूत करती है तथा समाज को धारण करती है और देवी मां की भांति सदा—सर्वदा उसका पालन पोषण एवं संस्कारित करती है। महिलाओं में अपार क्षमता एवं अद्वितीय शौर्य का भाव विद्यमान है। यदि महिलाएं देश को आगे ले जाने का संकल्प ले लें तो दुनिया की ऐसी कोई शक्ति नहीं जो उन्हें परास्त कर सके। नारीशक्ति के आगे यमराज को भी परास्त होना पड़ता है। नारीशक्ति का जागरण करने में अगर हम सफल हुए तो भारत क्या दुनिया में हमारी कीर्ति का डंका बजेगा।

आधी जनसंख्या महिलाओं की है। भारतीय महिलाएं विश्व में सर्वोच्च स्थान रखती हैं। हमारे इतिहास में केवल पुरुषों की गौरव गाथा का ही वर्णन नहीं है। भारतीय समाज में प्राचीनकाल से नारी का गौरवपूर्ण स्थान रहा है। यत्र नार्यस्तु पूजन्ते रमन्ते तत्र देवता। नारी के बिना कोई भी धार्मिक अनुष्ठान पूर्ण नहीं होता। देवताओं को भी असुरों का संहार करने के लिए शक्ति की आराधना करनी पड़ी थी। महिलाओं का उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने और राष्ट्र निर्माण में बराबर की सहभागिता से एक आदर्श समाज तथा राष्ट्र का निर्माण संभव है। नारी ही स्वयं प्रकृति है, सृष्टी की आद्य शक्ति है। इस संसार में जो कुछ भी है वह उसी आद्यशक्ति से ही है। इस आद्याशक्ति को हम महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली और उस परब्रह्म की शक्ति के रुप में मानते है। प्रत्येक स्त्री उस शक्तितत्त्व का अंश है इस संकल्पना से प्रेरणा लेकर भारतीय संस्कृति सतत प्रवाहित है।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहां रहने वाले महिला व पुरूष के परिश्रम से होती है। स्त्री एक प्रेरक शक्ति है। यही परिवार समाज व राष्ट्र को चैतन्य बनाती है। बीच के कालखण्ड में हमने उन्हें दीनहीन बनाया। महिलाएं स्व संरक्षण करने में सक्षम बने यह आज की महती आवश्यकता है। संस्कृति को बचाये रखने में महिलाओं का बड़ा योगदान होता है। जिस देश की महिलाएं अपनी संस्कृति छोड़कर विदेशी संस्कृति अपनाने लगें तो उस देश का कोई भविष्य नहीं है। भारत और उसकी संस्कृति को विश्व में सर्वश्रेष्ठ बनाकर एक आदर्श प्रस्तुत करना है। इस काम में महिलाओं का योगदान अपेक्षित है। आज महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुष से कंधे से कंधा मिलाकर चलने में सक्षम है। भारतीय समाज में स्त्री पुरूष शिव शक्ति का रूप है। विस्मृत हो चुकी शक्ति को पुनः प्राप्त करने की आवश्यकता है। इस समय में भारत में नव निर्माण का का काल चल रहा है। आगे आने वाले समय में नारी ही नेतृत्व करेगी। भारत में ऋषि मुनियों की परम्परा को जीवंत करना होगा। भारत में राष्ट्रपति के रूप में द्रौपदी मुर्मू भारत को आभा प्रदान कर रही हैं। माता अमृतानन्दमयी मां और साध्वी ऋतम्भरा जैसी दिव्य विभूति सम्पूर्ण मानवता को धर्म, संस्कृति, प्रेम, त्याग, पवित्रता एवं माधुर्य का संदेश दे रही हैं।

"भारत में नारी शक्ति राष्ट्र को मजबूत करती है तथा समाज को धारण करती है और देवी मां की भांति सदा—सर्वदा उसका पालन पोषण एवं संस्कारित करती है। महिलाओं में अपार क्षमता एवं अद्वितीय शौर्य का भाव विद्यमान है। यदि महिलाएं देश को आगे ले जाने का संकल्प ले लें तो दुनिया की ऐसी कोई शक्ति नहीं जो उन्हें परास्त कर सके।

राजस्थान में वसुंधरा राजे को नजरअंदाज करना बीजेपी के लिए आसान नहीं, महारानी ही दिलाएंगी जीत!

अंकित सिंह

भाजपा इस बात को भी अच्छी तरीके से जानती है कि राजस्थान में चुनाव से पहले वसुंधरा राजे को साइड करना उसके लिए खतरनाक साबित हो सकता है। वसुंधरा राजे को नजरअंदाज करना राजस्थान में कहीं से भी पार्टी के लिए हितकारी साबित नहीं होने वाला।

राजस्थान को लेकर यह बिल्कुल स्पष्ट है कि भाजपा इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित नहीं करेगी। इसका बड़ा कारण यह है कि उसके पास कोई पसंदीदा उम्मीदवार भी नहीं है। अगर अब भी कोई संदेह था तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को जयपुर में एक रैली में दोहराया, ₹मैं हर बीजेपी कार्यकर्ता से कहना चाहता हूं कि हमारी पहचान और शान केवल कमल है।₹ इससे कहीं ना कहीं सभी भाजपा कार्यकर्ताओं को यह संदेश देने की कोशिश की गई कि इस बार पार्टी सामुहिक नेतृत्व पर जोर दे रही है। ऐसे में सवाल यह है कि वसुंधरा राजे का क्या होगा? फिहलाह ऐसा लगता है कि भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व ने दो कार्यकाल की पूर्व मुख्यमंत्री को तीसरी बार पद के लिए दावेदारी से लगभग अलग कर दिया है।

वसुंधरा को नजरअंदाज करना नुकसानदेह

भाजपा इस बात को भी अच्छी तरीके से जानती है कि राजस्थान में चुनाव से पहले वसुंधरा राजे को साइड करना उसके लिए खतरनाक साबित हो सकता है। वसुंधरा राजे को नजरअंदाज करना राजस्थान में कहीं से भी पार्टी के लिए हितकारी साबित नहीं होने वाला। हाल में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और वरिष्ठ नेता अमित शाह जयपुर में पार्टी की कोर कमेटी की एक बड़ी बैठक में शामिल हुए थे।

हालांकि, इस बैठक से पहले दोनों नेताओं ने पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के साथ भी अलग मीटिंग की। इस बैठक के बाद दो चीजें हुई। पहली चीज की आलाकमान के सामने वसुंधरा राजे को सीएम का चेहरा बनाने की मांग करने वाले पूर्व विधायक देवी सिंह भाटी की पार्टी में वापसी हो गई। दूसरा यह की वसुंधरा राजे भी सक्रिय दिखाई दे रही हैं। ऐसे में अब यह भी सवाल उठ रहे हैं कि क्या वसुंधरा राजे को चुनाव के बाद किसी प्रकार की बात को लेकर आश्वासन दिया गया है?

जरूरी और मजबूरी

लेकिन इतना तो तय है कि राजस्थान में वसुंधरा राजे भाजपा के लिए जरूरी और मजबूरी दोनों है। 70 वर्षीय वसुंधरा राजे के पास सियासत का लंबा अनुभव है। साथ ही राजस्थान की राजनीति की अच्छी समझ है। वसुंधरा लोकसभा और विधानसभा दोनों में ही लगातार चुनाव जीतती रही हैं। 2003 तक बीजेपी के नेतृत्व वाली सरकारों में उन्होंने अलग-अलग मंत्रालयों को भी संभालना है। 1985 से वह राजस्थान की सियासत में सक्रिय हैं। ऐसे में भाजपा उन्हें दरकिनार नहीं कर सकती। हाल में ही कर्नाटक चुनाव के दौरान हमने देखा था कि किस तरीके से बीएस येदियुरप्पा की अनदेखी करना पार्टी के लिए हानिकारक साबित हो गया।

वसुंधरा राजे बड़ी नेता

इसमें कोई भी दो राय नहीं है कि राजस्थान में भाजपा के भीतर वसुंधरा राजे से बड़ा कोई नेता नहीं है। इसके साथ ही वह राजस्थान के मुख्यमंत्री और कांग्रेस नेता अशोक गहलोत के मुकाबले एक बड़ी नेता है। राजस्थान की राजनीति 2003 के बाद से लगातार इन्हीं दोनों नेताओं की इर्द-गिर्द घूमती रही है। वसुंधरा राजे भाजपा की लोकप्रिय नेता भी बनी और उनके नेतृत्व में पार्टी ने चुनाव भी जीता। अभी भी भाजपा की ओर से सीएम चेहरे को लेकर जनता में वसुंधरा राजे सबसे पहली पसंद है। 2018 में भी जब तमाम जगह इस बात के दावे किए जा रहे थे कि इस बार राजस्थान में भाजपा की हालत बेहद खराब है तब भी वसुंधरा राजे ने कांग्रेस को कड़ी टक्कर दी थी और भाजपा 73 सीटों पर चुनाव जीतने में कामयाब हुई थी।

जमीन से जुड़ी हुई नेता

राजस्थान में वसुंधरा राजे को जमीन से जुड़ी हुई नेता बताया जाता है। वैसी नेता है जो लगातार लोगों के बीच रहती हैं। लोगों से मिलती जुलती हैं। संगठन पर भी मजबूत पकड़ रखती हैं और पार्टी को भी साथ लेकर चलती हैं। हालांकि, यह बात भी सच है कि 2018 में मिली चुनावी हार के बाद संगठन पर उनकी पकड़ थोड़ी कमजोर हुई। हालांकि, उन्हें विधायकों का भरपूर साथ मिला। जब से सतीश पूनिया को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया, वसुंधरा राजे पार्टी के कार्यक्रमों से दूरी बनाने लगीं। उनकी नाराजगी को देखते हुए पूनिया को हटाकर सीपी जोशी को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया। तब जाकर महारानी सक्रिय दिखाई देने लगे।

सबकी नेता

हाल में भाजपा ने राजस्थान में परिवर्तन यात्रा निकाला था। परिवर्तन यात्रा को लेकर कई तरह की खबरें आईं। दावा किया गया कि राजस्थान के कई इलाकों में इस यात्रा में भीड़ नहीं जुट पाई। इसको लेकर यह भी कहा गया कि वसुंधरा राजे सक्रिय नहीं थी जिसकी वजह से पार्टी थोड़ी कमजोरी दिखी। वसुंधरा राजे जातिय समीकरण को भी साधने में माहिर है। वह खुद को जाटों की बहू, राजपूत की बेटी और गुर्जरों की समधन रहती हैं। महिला होने की वजह से राज्य की महिलाओं पर भी उनकी अच्छी पकड़ है। महिलाओं के लिए उन्होंने कई योजनाओं की राजस्थान में शुरुआत की थी। 200 सीटों वाली राजस्थान विधानसभा की 60 से 70 सीटों पर वसुंधरा राजे की सीधी पकड़ है। वहीं उन्हें मुस्लिम वोट भी मिलते आ रहे हैं।

भावनाओं को नहीं कर पातीं कंट्रोल, मेंटली स्ट्रॉन्ग बनने के लिए अपनाएं 5 साइकोलॉजिकल ट्रिक्स

मेंटली स्ट्रॉन्ग होना यानी अपने सबसे बुरे हालात में भी अपना बेस्ट परफॉर्म करना और हर तरह के चैलेंज को पूरा करने के लिए मानसिक रूप से हर वक्त तैयार रहना. लेकिन, कई महिलाओं की ये समस्या होती है कि वे भावनात्मक रूप से चाहकर भी खुद को अंदर से स्ट्रॉन्ग नहीं बना पातीं और ठोकर खाते हीं बिखर जाती हैं. उन्हें किसी के सहारा की जरूरत महसूस होती है. ऐसी महिलाएं कुछ साइकोलॉजिकल ट्रिक्स को अपनाकर खुद को मजबूत बना सकती हैं और जीवन में आगे बढ़ सकती हैं.

पॉजिटिव साइकोलॉजी के मुताबिक, सबसे पहले तो आप यह आदत अपने भीतर डाल लें कि आप सीखने के लिए हर वक्त तैयार रहें. खुद को हर वक्त निखारते रहें और कुछ ना कुछ स्किल अपने अंदर विकसित करती रहें. ऐसा करने से आप जमाने के साथ चल सकेंगी और आपका आत्मविश्वास बढ़ता जाएगा. इसका असर आपके मेंटल स्ट्रेन्थ पर भी पड़ेगा.

अपने लाइफ में छोटे छोटे गोल निर्धारित करें और उसे अचीव करने के लिए पूरा प्रयास करें. इस तरह आपका व्हील पावर बढ़ेगा और आप खुद को फ्लेक्सिबल बना सकेंगी. ये गोल छोटे और बड़े, दोनों हो सकते हैं. यह आपके फिजिकल हेल्थ, इमोशनल हेल्थ, करियर, फाइनेंस, आध्यात्म या किसी से भी संबंधित हो सकता है. शोधों में भी पाया गया है कि छोटे छोटे अचीवमेंट आपको मेंटली स्ट्रॉन्ग बनाने का काम करते हैं.

जरूरतमंदों की मदद करें. यह ना केवल आपको अपने अंदर की नकारात्मक एनर्जी से लड़ने में मदद करेगा, बल्कि यह आपके अंदर आत्मविश्वास पैदा करने का भी काम करेगा. यही नहीं, इस तरह आप आपना स्पेशल सोशल सर्कल भी बना पाएंगी और आप समाज में अपनी एक पहचान क्रिएट कर सकेंगी. इस तरह आप सच्चा दोस्त भी ढूंड पाएंगी.

यह मान लें कि अगर आप अपने जीवन में मेहनत करेंगी तो यह आपको तरह तरह के अनुभव हासिल करने का मौका देगा. इसलिए अगर आपके हाथ किसी भी तरह की ऑपोरचुनिटी आए, आप उसे छोड़ें नहीं और पॉजिटिव सोच के साथ उस काम को अंजाम दें. इस तरह आप खुद को विकसित कर पाएंगी. यह आपको मानसिक रूप से मजबूत बनने में काफी मदद करेगा.

नकारात्मक सोच रखने वालों से जहां तक हो सके दूरी बनाएं. ऐसे लोग आपको जीवन में आगे बढ़ने की बजाय, पीछे खींचने का काम कर सकते हैं. ऐसे लोग अगर आसपास हैं तो सकारात्मक सोच वालों के बीच अपना सर्कल अधिक बढ़ाने का प्रयास करें और उन लोगों से ही किसी भी तरह का सुझाव लें. इस तरह बुरे हालात में भी आप सकारात्मक सोच के साथ ताकत से आगे बढ़ पाएंगी.

आजादपुर मंडी के शेड में लगी भीषण आग

कोई हताहत नहीं; एक घंटे में आग पर पाया काबू

परिवहन विशेष न्यूज

एस डी सेठी, नई दिल्ली। दमकल की 11 गाड़ियों ने करीब एक घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया। घटना में कोई हताहत नहीं हुआ है। पुलिस आग लगने के कारणों और इससे हुए नुकसान का आकलन कर रही है।

दिल्ली की आजादपुर मंडी में शुक्रवार शाम टमाटर रखने के लिए बने शेड में अचानक आग लग गई। आग टमाटर रखने वाले प्लास्टिक के कैरेट में लगी थी और तेजी से फैल गई। चारों तरफ धुएं का गुब्बार फैल गया। वहां मौजूद लोगों ने भागकर अपनी जान बचाई। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची दमकल की 11 गाड़ियों ने करीब एक घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया। घटना में कोई हताहत नहीं हुआ है। पुलिस आग लगने के कारणों और इससे हुए नुकसान का आकलन कर रही है।

दमकल अधिकारियों ने बताया, शुक्रवार शाम 5.15 बजे आजादपुर मंडी के गेट संख्या एक के पास टमाटर रखने के शेड में आग लगने की जानकारी मिली। स्थानीय लोगों ने बताया, लोग जान बचाने के लिए शोर मचाकर इधर उधर भागने लगे। मौके पर पहुंचे दमकल कर्मियों ने घटनास्थल को अपने कब्जे में ले लिया और वहां से लोगों को दूर हटाया। उसके बाद दमकल कर्मी आग बुझाने में जुट गए।

दमकल अधिकारी पारस कुमार ने बताया कि दमकल कर्मियों ने 15 से 20 मिनट में आग को नियंत्रित कर लिया और करीब एक घंटे में आग पर पूरी तरह से काबू पा लिया। शुरुआती जांच के बाद पुलिस अधिकारी ने बताया कि शेड में हजारों की संख्या में प्लास्टिक के कैरेट रखे हुए थे। आशंका है कि शार्ट सर्किट होने की वजह से कैरेट में आग लगी। पुलिस आग लगने के कारणों की जांच कर रही है।

एलजी ने दी मंजूरी, जारी रहेगी वर्तमान शराब नीति; छह महीने के लिए बढ़ाया आगे

दिल्ली सरकार ने आबकारी नीति 2020-21 को 31 मार्च 2024 तक के लिए बढ़ा दिया है। इसके लिए एक सर्कुलर जारी किया गया है।

दिल्ली में चल रही वर्तमान आबकारी नीति को अगले छह महीने के लिए बढ़ा दिया गया है। दिल्ली सरकार ने आबकारी नीति 2020-21 को 31 मार्च 2024 तक के लिए बढ़ा दिया है। इसके लिए एक सर्कुलर जारी किया गया है। क्योंकि वर्तमान शराब नीति 30 सितंबर 2023 तक समाप्त हो रही है। पिछले साल एक सितंबर को लागू मौजूदा आबकारी नीति को अगले छह महीने के लिए बढ़ा दिया गया है। नई नीति के तहत केवल सरकारी दुकानों पर ही शराब बिकेगी। पुरानी नीति 30 सितंबर को समाप्त होने वाली थी। उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने दिल्ली सरकार की पहली नई नीति में कथित अनियमितताओं को लेकर सीबीआई जांच की सिफारिश की थी। जिसके बाद सरकार ने अपनी नई नीति को रद्द कर दिया और पुरानी नीति पर लौट आए। यह नीति 31 मार्च 2023 को समाप्त होने वाली थी। लेकिन दिल्ली सरकार ने इसे छह महीने के लिए 30 सितंबर तक के लिए बढ़ा दिया है।

दिल्ली:25 करोड के ज्वैलथीफ पुलिस के हत्थे चडे

परिवहन विशेष।।एसडी सेठी।

बडे ही शातिर अंदाज में दिल्ली के भोगल स्थित जूलरी शोरूम से रविवार को स्ट्रोंग रूम की दीवार में डेढ फिट का होल कर घुसे चोरों ने करीब 20-25 करोड रूपये की जूलरी पर हाथ साफ करने वाले जूलथीफ को पुलिस ने छत्तीस गढ से गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने इनके पास से बडी मात्रा में सोने के आभूषणों को बरामद कर लिया है। उनसे 18 कलो सोना और 12.50 लाख कैश बरामद हुआ है। पुलिस लोकेश के दूसरे साथी शिवा चंद्रवंशी को भी 28 लाख के माल के साथ गिरफ्तार किया है। आरोपियों को दिल्ली पुलिस उन्हें छत्तीसगढ से दिल्ली ला रही है।

उल्लेखनीय है कि शोरूम मालिक महावीर प्रसाद जैन के मुताबिक जंगपुरा मार्किट सोमवार को बंद रहता है। रविवार को शोरूम बंद करने के बाद जब वह मंगलवार को अपने शोरूम पर पहुंचे और देखा तो उनके होश उड गए।उन्होने बताया कि शौरूम में रखी पूरी ज्वेलरी गायब थी।यह देखकर उनके होश उड। गए। उन्होंने इसकी जानकारी पुलिस को दी। चोर छत का दरवाजा तोडकर नीचे शोरूम और स्ट्रांग तक पहुंचे। स्ट्रांग की दीवार में डेढ फिट का सुराख कर वहां से घुसे। चोरों ने सोने, हीरे की ज्वेलरी तो पूरी साफ कर दी। लेकिन चांदी की ज्वेलरी को छोड दिया।छत्तीसगढ पुलिस के हत्थे चडा मास्टर मांइंड लोकेशश्रीवास वो कवर्धा जिले का रहने वाला है।वह अब तक कई राज्यों में चोरी की वारदातों को अंजाम दे चुका है। उसके खिलाफ तेलंगाना, महाराष्ट्र, दिल्ली,छत्तीसगढ में भी एफआईआर दर्ज है। दरअसल छानबीन के दौरान पता चला कि 10दिन पहले उसने छत्तीसगढ में दुर्ग जिले की स्मृति नगर पुलिस चौकी से कुछ मीटर दूरी पर ही एक कमरा किराए पर लिया था।इसी दौरान बिलास पुर पुलिस कवर्धा से ही उसका पीछा कर रही थी।इसी के चलते उसे भिलाई में पकड लिया गया। अब वह छत्तीसगढ पुलिस की हिरासत में है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक साल 2019 में पारख ज्वैलर्स के यहां 5 करोड की बडी चोरी का मामला सामने आया था। 5करोड की ज्वेलरी पर भी लोकेश श्रीवास ने सी अंजाम दिया था। उसने वहां भी दिल्ली वाली तकनीक अपनाई थी।

दानिश अली ने पीएम को पत्र लिखकर मांगी सुरक्षा, बिधूड़ी पर उचित कार्रवाई की मांग की

बसपा सांसद दानिश अली ने पीएम मोदी को पत्र लिखकर सुरक्षा की मांग की है। साथ ही आपत्तिजनक टिप्पणी मामले में भाजपा सांसद रमेश बिधूड़ी के खिलाफ उचित कार्रवाई की मांग की है।

बसपा सांसद दानिश अली ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से आग्रह किया कि आपत्तिजनक टिप्पणी मामले में भाजपा सांसद रमेश बिधूड़ी के खिलाफ उचित कार्रवाई की जाए। उन्होंने इस मामले में प्रधानमंत्री की चुप्पी को दुर्भाग्यपूर्ण करार दिया। उन्होंने कहा कि घटना को आठ दिन बीत चुके हैं, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। इसलिए उन्होंने पीएम मोदी को पत्र भी लिखा है। पत्र में दानिश अली ने खुद को मिल रही धमकियों का हवाला देते हुए सुरक्षा बढ़ाने की भी मांग की।

नई दिल्ली। अली ने कहा कि संसद के विशेष सत्र के दौरान हुई यह घटना एक व्यक्ति के तौर पर सिर्फ उन पर हमला नहीं थी, बल्कि इसने लोकतंत्र की मर्यादा को ठेस पहुंचाई है। उन्होंने उम्मीद जताई कि सदन के नेता के तौर पर प्रधानमंत्री इस पर संज्ञान लेंगे। दानिश अली ने बिधूड़ी को भड़काने के भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के आरोप पर कहा कि उन्होंने खुद पीएम मोदी के संदर्भ के साथ अनुचित शब्दों के इस्तेमाल पर आपत्ति जताई थी।

सांसद दानिश अली ने कहा कि 'आप उस दिन सदन में मौजूद नहीं थे, फिर भी बिधूड़ी ने अपने संबोधन के दौरान आपका जिक्र करते हुए अनुचित भाषा का इस्तेमाल किया। मैंने प्रधानमंत्री के संबंध में ऐसी भाषा के उपयोग पर आपत्ति जताई। सदन की कार्यवाही से यह स्पष्ट है कि सत्ता पक्ष के किसी भी सदस्य ने आपके प्रति असंसदीय भाषा के उपयोग के खिलाफ मेरे रुख पर आपत्ति नहीं जताई। लेकिन जब मैंने खड़े होकर इसका विरोध किया तो शायद बिधूड़ी को अपनी गलती का इस्तेमाल हो गया और उन्होंने ध्यान भटकाने के लिए मुझ पर ज्यादा आक्रामक ढंग से हमले शुरू कर दिए।' अली ने कहा कि दुनिया हमें संसदीय लोकतंत्र के पथ प्रदर्शक के तौर पर देखती है। हमारे लोकतंत्र में ऐसी अशोभनीय घटनाओं के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। अनुरोध है कि संसदीय कार्यवाही के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए ऐसे व्यवहार की निंदा करते हुए सार्वजनिक बयान दें।

भाजपा सांसद रमेश बिधूड़ी ने संसद में बसपा सांसद दानिश अली के खिलाफ अभद्र टिप्पणी की थी। टिप्पणी के बाद ज्यादातर विपक्षी दल दानिश अली के साथ खड़े हुए। जिस तरीके से सियासी दलों ने उनका समर्थन किया है, वह उनको तकलीफ की इस घड़ी में बहुत संयम देने वाला है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने अपने सांसद को इस अपमानजनक टिप्पणी के लिए तो सम्मानित भी कर दिया है। दानिश अली ने कहा कि भाजपा ने तो अपने सांसद के खिलाफ कोई कारवाई तक नहीं की। वह कहते हैं कि उनसे जो भी नेता मुलाकात कर रहा है या उनके समर्थन में खड़ा हो रहा है, दरअसल वह संसद में बोली गई सत्ता पक्ष के सांसद की अभद्र भाषा शैली और उक्त सांसद के खिलाफ की जाने वाली कारवाई की मांग को लेकर है।

चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी करवाना चाहता था आरोपी, पीएम के बाल काटना है सपना

दिल्ली के जंगपुरा में सबसे बड़ी चोरी को अंजाम देने वाला हाईप्रोफाइल चोर गिरफ्तार हो गया है। हाईप्रोफाइल चोर ने सबसे चोरी को अकेले ही अंजाम दिया है। आरोपी पूरे देश भर में सिर्फ बड़ी चोरियों ही करता था।

नई दिल्ली। दिल्ली की सबसे बड़ी चोरी हाईप्रोफाइल चोर अंजाम कवर्धा, छत्तीसगढ़ के लोकेश श्रीवास (35) ने की है। लोकेश सुपरचोर बंटी की तर्ज पर अकेले ही पूरे देश में बड़ी चोरियां करता था। दिल्ली से पहले वह तेलंगाना में 40 किग्रा सोना चुरा चुका है। दिल्ली पुलिस ने छत्तीसगढ़ और आंध्रप्रदेश पुलिस के साथ संयुक्त रूप से लोकेश श्रीवास को उसके साथी शिवा चंद्रवंशी के साथ बिलासपुर से गिरफ्तार किया है।

लोकेश का सपना पीएम के बाल काटना

छत्तीसगढ़ पुलिस ने दिल्ली पुलिस को लोकेश के बारे में इनपुट दिए थे। दिल्ली पुलिस का कहना है कि फिलहाल बिलासपुर पुलिस ने इन दोनों की गिरफ्तारी व 18.5 किग्रा सोने की बरामद की है। सलून में काम करने वाला हाईप्रोफाइल चोर लोकेश का सपना है कि वह एक बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सोने की कैंची, सोने की कंघी और सोने के उस्तरे से बाल काटे। लोकेश दिल्ली में चोरी के बाद प्लास्टिक सर्जरी करवाकर पहचान भी बदलने वाला था।

300 सीसीटीवी फुटेज को खंगाला

दिल्ली पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि बिलासपुर में श्रीराम क्लाथ मार्केट और सत्यम चौक से अग्रसेन चौक के बीच करीब 7 से 8 दुकानों में चोरी की घटना 19 सितंबर को हुई थी। इस समय आंध्रप्रदेश पुलिस छत्तीसगढ़ 40 किग्रा सोना चोरी की वारदात के आरोपियों का पीछा करते हुए छत्तीसगढ़ पहुंच गई थी। पुलिस टीमों ने लगभग 300 सीसीटीवी फुटेज को खंगाला। तभी छत्तीसगढ़ पुलिस को सूचना मिली थी कि घटना वाले दिन मुख्य आरोपी लोकेश श्रीवास अपने साथी शिवा चन्द्रवंशी के साथ आसपास दिखाई दिया है।

दिल्ली की वारदात को दिया अंजाम

इसके बाद पुलिस ने उसके सहयोगी शिवा चन्द्रवंशी को गिरफ्तार कर लिया। इसके पास से सोने की ज्वेलरी और लगभग 23 लाख रुपये बरामद किए गए। पूछताछ करने पर शिवा ने बतया कि उसने दुकानों और तेलंगाना में चोरी लोकेश के साथ की है और लोकेश चोरी की बड़ी वारदात करने दिल्ली गया है।

फ्लाइट से जांच के लिए पहुंची दिल्ली पुलिस

छत्तीसगढ़ पुलिस ने ये इनपुट, लोकेश का मोबाइल व अन्य जानकारी दिल्ली पुलिस के साथ साझा की। दक्षिण-पूर्व जिला पुलिस उपायुक्त राजेश देव ने बताया कि छत्तीसगढ़ पुलिस से प्राप्त इनपुट के आधार पर मामले में मुख्य संदिग्ध के रूप में लोकेश श्रीवास की 28 सितंबर को पहचान की गई। इसकी फोटो उमराव सिंह शोरूम में 24 सितंबर को प्रवेश करते हुए और 25 सितंबर को बाहर निकलते हुए कैद हुई फोटो से मेल खा रही थीं।

दिलीप देवतवाल को मदनगीर मंडल भाजपा का अध्यक्ष बनाए जाने पर कार्यकर्ताओं में भारी खुशी

नवनियुक्त भाजपा मंडल अध्यक्ष दिलीप देवतवाल ने सांसद बिधूड़ी का जताया आभार

"दिलीप देवतवाल से उनके अध्यक्ष बनने के बारे में चर्चा की गई तो उन्होंने प्रदेश नेतृत्व, दक्षिण दिल्ली के कर्मठ सांसद रमेश बिधूड़ी, जिला अध्यक्ष रणवीर तंवर एवं एससी मोर्चा महरौली जिला के पूर्व अध्यक्ष चंद्रपाल बैरवा का आभार व्यक्त किया। जिन्होंने उन पर विश्वास करते हुए इतनी बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। मदनगीर वार्ड 165 से भाजपा के नवनियुक्त मंडल अध्यक्ष दिलीप देवतवाल ने आज अपने कार्यकताओं के साथ दक्षिणी दिल्ली सांसद रमेश बिधूड़ी के आवास पर जाकर उनका धन्यवाद वा आभार व्यक्त किया।

महरौली जिला एससी मोर्चा के कार्यालय मंत्री एवं मदनगीर के खंड प्रमुख के रूप में अपनी बेहतर जिम्मेदारियो का निर्वाह कर दिलीप देवतवाल ने यह साबित किया कि वह भाजपा के सच्चे सिपाही हैं। पार्टी के प्रति उनके समर्पण, लग्न एवं मेहनत को देखते हुए भाजपा ने उन्हें मदनगीर मंडल 165 का मंडल अध्यक्ष बनाया है। मिलनसार स्वभाव एवं सबको साथ लेकर चलने की श्री देवतवाल में अद्भुत क्षमता है। मदनगीर मंडल में भाजपा को संगठित करने एवं पार्टी के जनाधार विस्तार में उन्होंने पहले भी अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई है। अध्यक्ष के रूप में अब वह अपनी जिम्मेदारियो को और बेहतर ढंग से पूरा कर पाएंगे इसी उम्मीद के साथ ही पार्टी ने उन्हें अध्यक्ष पद का दायित्व दिया है।

दिलीप देवतवाल ने कहा कि वह अपनी जिम्मेदारियो का भरपूर निर्वाह करेंगे तथा पार्टी के जनाधार विस्तार के लिए यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों एवं कार्यों तथा दक्षिण दिल्ली के जुझारू, लोकप्रिय सांसद रमेश बिधूड़ी द्वारा क्षेत्र में कराए गए विकास कार्यों की जानकारी घर-घर तक पहुंचाएंगे।

ऐसे खुली दिल्ली की सबसे बड़ी चोरी: लोकेश दिल्ली बड़ी वारदात करने गया है...महज इस लाइन से साजिश का हुआ खुलासा

पुलिस को कवर्धा में आरोपियों के होने का पता चला था। इसके बाद बिलासपुर पुलिस ने बुधवार 27 सितंबर को वहां छापा मारा और एक आरोपी शिवा चंद्रवंशी को गिरफ्तार किया। पूछताछ करने पर शिवा ने बताया कि उसके साथी को नाम लोकेश है और वह दिल्ली में बड़ी वारदात करने गया है।

लोकेश दिल्ली बड़ी वारदात करने गया है...इस लाइन के सामने आने के बाद दिल्ली की सबसे बड़ी 25 करोड़ की चोरी की वारदात सुलझ गई। इसके बाद छत्तीसगढ़ पुलिस ने दिल्ली पुलिस के साथ सूचना व मोबाइल नंबर साझा किया। ये सूचना दिल्ली पुलिस खासकर दक्षिण-पूर्व जिला पुलिस के पास गुरुवार को सुबह 10.3 बजे आ गई थी। इसके बाद दिल्ली पुलिस की टीम को छत्तीसगढ़ भेजा गया। छत्तीसगढ़ की एंटी-क्राइम एंड साइबर यूनिट और सिविल लाइन पुलिस स्टेशन की पुलिस शहर में चोरी की कई घटनाओं की जांच कर रही थी। पुलिस को कवर्धा में आरोपियों के होने का पता चला था। इसके बाद बिलासपुर पुलिस ने बुधवार 27 सितंबर को वहां छापा मारा और एक आरोपी शिवा चंद्रवंशी को गिरफ्तार किया। कड़ाई से पूछताछ करने पर शिवा चंद्रवंशी ने पुलिस को बताया कि उसके साथी को नाम लोकेश है और वह दिल्ली में बड़ी वारदात करने गया है। इसके बाद छत्तीसगढ़ पुलिस अलर्ट हो गई। छत्तीसगढ़.को दिल्ली के 25 करोड़ की चोरी के बारे में पहले से पता था। इसके बाद छत्तीसगढ़ पुलिस ने दिल्ली पुलिस को लोकेश का मोबाइल नंबर, उसकी बहन व परिजनों को मोबाइल दिया। पीछा करते हुए दिल्ली पुलिस भी छत्तीसगढ़ पहुंच गई। इंस्पेक्टर विष्णु दत्त शर्मा व दिनेश को फ्लाइट से छत्तीसगढ़ भेजा। इसके अलावा जिले के वाहन चोरी निरोधक दस्ते के प्रभारी आर एस डागर की टीम को आरोपी का लोकेशन के आधार पर पीछा करते हुए सड़क के रास्ते छत्तीसगढ़ भेजा। आरोपी लोकेश अभी छत्तीसगढ़ पुलिस की कस्टडी हैं। उसे शनिवार को कोर्ट में पेश किया जाएगा। ये कल ही पता लगेगा कि अदालत आरोपी को आंध्रप्रदेश पुलिस को देती है या फिर दिल्ली पुलिस को देती है।

लोनी विधायक नंदकिशोर ने सीएम योगी को लिखा पत्र

कहा- बड़े नेता छवि खराब करने की रच रहे साजिश

परिवहन विशेष न्यूज

लोनी। लोनी विधायक नंदकिशोर गुर्जर ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर एक नेता के ऊपर षड्यंत्र के तहत छवि खराब करने का आरोप लगाया है। विधायक ने मामले की जांच की मांग के साथ सीडी में ऑडियो रिकॉर्डिंग भी मुख्यमंत्री को भेजी है

पत्र में विधायक ने कई मामलों का जिक्र करते हुए लिखा कि 'एक बड़े नेता द्वारा लगातार मेरी छवि को धूमिल करने के लिए आईटी सेल के माध्यम से कूटरचित वीडियो/ऑडियो बनाने, झूठा किसी मसले में फंसाने आदि का लगातार षड्यंत्र किया जा रहा है। आज मुझे दिल्ली के एक वरिष्ठ पत्रकार ने जानकारी दी है कि यह नेता मुझे षड्यंत्र के तहत फंसाने के लिए पूरा प्रयास कर रहा है। भाजपा संगठन द्वारा दी गई जिम्मेदारी के तहत हिमाचल चुनाव में कांगड़ा प्रवास के दौरान एक अज्ञात नंबर से वीडियो कॉल आई, जैसे ही मैंने उठाया तो दूसरी तरफ से एक अज्ञात महिला ने नग्न अवस्था में अभद्र बातें शुरू कर दी। मैंने तुरंत फोन काट दिया और इसकी जानकारी कार्यवाही हेतु नंबर सहित तत्कालीन थाना प्रभारी लोनी, अजय चैधरी को दी। इसी तरह किसान आंदोलन में राकेश टिकैत प्रकरण में भी मेरे न होने के बावजूद मेरा नाम लिया गया। टिकैत प्रकरण में नाम लेने के लिए कहने की बात को, मुझसे फोन पर वार्ता के दौरान उक्त नेता द्वारा स्वंय स्वीकार किया गया है.'

विधायक ने पत्र में वरिष्ठ पत्रकार के हवाले से लिखते हुए कहा कि 'यह नेता किसी बड़े अपराधी से मिलकर हमला कराने, किसी महिला के द्वारा आईटी को दुरूपयोग करते हुए कूटरचित वीडियो/ऑडियो बनाकर व किसी झूठे मामले में फंसाने का प्रयास कर सकता है। इस षड्यंत्र की जानाकरी साक्ष्यों के साथ शीघ्र आपके समक्ष प्रस्तुत की जाएगी। विधायक ने अज्ञात नेता पर अन्य जनप्रतिनिधियों/नेताओं की भी छवि खराब करने का आरोप लगाया है।' विधायक ने प्रकरण की जांच की मांग के साथ सीडी में ऑडियो रिकॉर्डिंग भी मुख्यमंत्री को भेजी है।

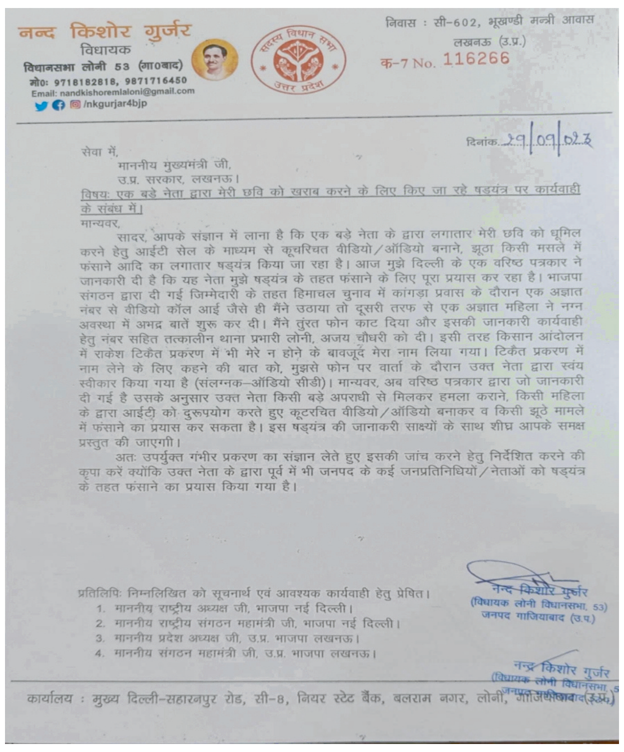

नन्द किशोर गुर्जर
विधायक
विधानसभा लोनी 53 (गा0बाद)
मो0: 9718182818, 9871716450
Email: nandkishoremlaloni@gmail.com
/nkgurjar4bjp

निवास : सी-602, भूखण्डी मन्त्री आवास
लखनऊ (उ.प्र.)
क-7 No. 116266

दिनांक 29/09/023

सेवा में,
माननीय मुख्यमंत्री जी,
उ.प्र. सरकार, लखनऊ।

विषयः एक बडे नेता द्वारा मेरी छवि को खराब करने के लिए किए जा रहे षडयंत्र पर कार्यवाही के संबंध में।

मान्यवर,

सादर, आपके संज्ञान में लाना है कि एक बड़े नेता के द्वारा लगातार मेरी छवि को धूमिल करने हेतु आईटी सेल के माध्यम से कूचरिचत वीडियो/ऑडियो बनाने, झूठा किसी मसले में फंसाने आदि का लगातार षड्यंत्र किया जा रहा है। आज मुझे दिल्ली के एक वरिष्ठ पत्रकार ने जानकारी दी है कि यह नेता मुझे षड्यंत्र के तहत फंसाने के लिए पूरा प्रयास कर रहा है। भाजपा संगठन द्वारा दी गई जिम्मेदारी के तहत हिमाचल चुनाव में कांगड़ा प्रवास के दौरान एक अज्ञात नंबर से वीडियो कॉल आई जैसे ही मैंने उठाया तो दूसरी तरफ से एक अज्ञात महिला ने नग्न अवस्था में अभद्र बातें शुरू कर दी। मैंने तुरंत फोन काट दिया और इसकी जानकारी कार्यवाही हेतु नंबर सहित तत्कालीन थाना प्रभारी लोनी, अजय चौधरी को दी। इसी तरह किसान आंदोलन में राकेश टिकैत प्रकरण में भी मेरे न होने के बावजूद मेरा नाम लिया गया। टिकैत प्रकरण में नाम लेने के लिए कहने की बात को, मुझसे फोन पर वार्ता के दौरान उक्त नेता द्वारा स्वंय स्वीकार किया गया है (संलग्नक-ऑडियो सीडी)। मान्यवर, अब वरिष्ठ पत्रकार द्वारा जो जानकारी दी गई है उसके अनुसार उक्त नेता किसी बड़े अपराधी से मिलकर हमला कराने, किसी महिला के द्वारा आईटी को दुरूपयोग करते हुए कूटरचित वीडियो/ऑडियो बनाकर व किसी झूठे मामले में फंसाने का प्रयास कर सकता है। इस षड्यंत्र की जानाकरी साक्ष्यों के साथ शीघ्र आपके समक्ष प्रस्तुत की जाएगी।

अतः उपर्युक्त गंभीर प्रकरण का संज्ञान लेते हुए इसकी जांच करने हेतु निर्देशित करने की कृपा करें क्योंकि उक्त नेता के द्वारा पूर्व में भी जनपद के कई जनप्रतिनिधियों/नेताओं को षड्यंत्र के तहत फंसाने का प्रयास किया गया है।

नन्द किशोर गुर्जर
(विधायक लोनी विधानसभा, 53)
जनपद गाजियाबाद (उ.प्र.)

प्रतिलिपिः निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।
1. माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, भाजपा नई दिल्ली।
2. माननीय राष्ट्रीय संगठन महामंत्री जी, भाजपा नई दिल्ली।
3. माननीय प्रदेश अध्यक्ष जी, उ.प्र. भाजपा लखनऊ।
4. माननीय संगठन महामंत्री जी, उ.प्र. भाजपा लखनऊ।

नन्द किशोर गुर्जर
(विधायक लोनी विधानसभा, 53)

कार्यालय : मुख्य दिल्ली-सहारनपुर रोड, सी-8, नियर स्टेट बैंक, बलराम नगर, लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.)

केमिकल और गत्ता फैक्टरी में लगी आग, 17 फायर टेंडरों की मदद से पाया काबू

सीएफओ ने बताया कि धुआं ज्यादा होने के कारण आग पर काबू पाने में परेशानी होने की वजह से तीन जेसीबी बुलाकर फैक्टरी की दीवारों को कई जगहों से तुड़वाकर आग पर कई घंटों की कड़ी मशक्कत से काबू पाया गया।

गाजियाबाद कोतवाली क्षेत्र के साउथ साइड औद्योगिक क्षेत्र में शुक्रवार तड़के करीब 3:40 बजे केमिकल और गत्ता फैक्टरी में आग लग गई। सूचना मिलने पर दमकल कर्मियों की मदद से 17 फायर ब्रिगेड से आग पर काबू पाया गया। फायर ब्रिगेड वैशाली, साहिबाबाद, मोदीनगर, नोएडा, हापुड़, मेरठ समेत आसपास से बुलाई गई। सीएफओ राहुल पाल ने बताया कि प्लॉट नम्बर-22/12 साऊथ साईड जीटी रोड इंडसट्रियल एरिया वरुणा कैमिकल्स फैक्टरी में आग की सूचना मिली। काला धुआं और कैमिकल के ड्रम फटने से आग बेकाबू हो गई और पड़ोस में गत्ता फैक्टरी प्रेम इंडस्टीज प्लॉट नम्बर-22/13 में भी आग फेल गई। सीएफओ ने बताया कि धुआं ज्यादा होने के कारण आग पर काबू पाने में परेशानी होने की वजह से तीन जेसीबी बुलाकर फैक्टरी की दीवारों को कई जगहों से तुड़वाकर आग पर कई घंटों की कड़ी मशक्कत से काबू पाया गया।

यति नरसिंहानंद ने सीएम योगी को लेकर दिया विवादित बयान, खून से लिखा पत्र मुख्यमंत्री को देने से रोका

यति नरसिंहानंद गिरी महाराज ने यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ को लेकर एक बड़ा बयान दिया है। दरअसल, मेरठ के दीपक त्यागी की बरसी में जाने से रोकने के लिए शिवशक्ति धाम डासना को पुलिस ने छावनी बना दिया था। पुलिस ने महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरी को नजरबंद कर दिया था।

गाजियाबाद। शिव शक्ति धाम डासना में महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरी महाराज ने यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ को लेकर एक बड़ा बयान दिया है। उन्हें एक बार फिर नजरबंद किया गया। इसी दौरान पुलिस और उनके बीच बातचीत का वीडियो सामने आया है।

सीएम योगी पर दिया विवादित बयान

पुलिस अधिकारी यति नरसिंहनंद गिरी महाराज से कहते हैं सिर्फ पांच बजे तक। इसके बाद वीडियो में यति नरसिंहनंद कहते हैं कि हमने मुलायम सिंह यादव का समय देखा, कभी नहीं रूके पुलिस से, फिर हमने मायावती का समय देखा। ये पूरा इलाका जानता है। उसके बाद हमने अखिलेश यादव का समय देखा। आज वहां पर हमारा ही आदमी मुख्यमंत्री बनकर बैठा है और आप हमें ही कुचल रहे हो। क्यों वह आपकी बात सुन रहे हैं और हमारी बात नहीं सुन रहे हैं।

आगे कहा कि योगी रावण से बड़ा नहीं है। कभी योगी को लगता हो कि सत्ता बड़ी है। मैं तो आज मर जाऊंगा या कल। सत्ता कभी किसी की नहीं रहने वाली है। इसके बाद वीडियो में देख सकते हैं कि कैसे पुलिस अधिकारी कह रहे हैं कि सर सिर्फ पांच बजे तक। वो पूछते हैं कि यहां डीसीपी साहब आ रहे हैं या फिर कमिश्नर साहब आ रहे हैं।

शिवशक्ति धाम बना छावनी

दरअसल, मेरठ के दीपक त्यागी की बरसी में जाने से रोकने के लिए शिवशक्ति धाम डासना को पुलिस ने छावनी बना दिया था। पुलिस ने महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरी को नजरबंद कर दिया था। इसके बाद महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरी जी महाराज ने अपने खून से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखा था। यह पत्र सीएम योगी आदित्यनाथ तक पहुंचाया जाना था।

नरसिंहानंद ने आरोप लगाया कि उनके शिष्य यति निर्भयानंद, यति रणसिंहानंद, यति असीमानंद और यति सत्यानंद को जबरदस्ती रोककर पुलिस ने जेल में डालने की धमकी दी। पुलिस अधिकारियों ने शिवशक्ति धाम में बुलडोजर चलाकर उजाड़ने को कहा। पुलिस अधिकारियों ने महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरी महाराज को आशाराम बापू और राम रहीम बनाने की धमकी दी।

पुलिस की कार्रवाई से आक्रोशित हुए महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरी ने कहा कि उन्हें मारा या जेल में बंद किया जा सकता है, लेकिन उनकी आवाज को दबाया और उन्हें झुकाया नहीं जा सकता। उन्होंने बताया कि पुलिस की उत्पीड़नात्मक कार्रवाई के बारे में बताने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नाम खून से पत्र लिखा था, लेकिन पुलिस ने ले जाने नहीं दिया। वहीं पुलिस ने आरोपों को निराधार बताया है।

हत्या के बाद थी दीपक त्यागी की बरसी

दीपक त्यागी हत्याकांड के एक साल होने पर परिजन यति नरसिंहानंद महाराज से मिलने गाजियाबाद पहुंचे थे। हत्याकांड के एक साल पूरे होने पर पुण्यतिथि पर पीड़ति परिवार ने शांति यज्ञ रखा। शांति यज्ञ में देशभर के साधु-संतों और हिंदुओं से भाग लेने की अपील की थी। इस यज्ञ में शामिल होने के लिए यति नरसिंहानंद महाराज जाने वाले थे, इसलिए पहले पुलिस ने उन्हें नजरबंद कर दिया।

मेरठ जिले में परीक्षितगढ़ के खजूरी गांव में 27 सितंबर 2022 को दूसरे संप्रदाय के लोगों ने दीपक त्यागी की निर्मम हत्या कर दी थी। पुलिस ने खजूरी गांव निवासी फैमीद को हिरासत में लेकर पूछताछ की थी। फैमीद गांव में झोपड़ी बनाकर अपने परिवार के साथ रहता था, जो मूलरूप से दौराला के पास सरसवा गांव का रहने वाला है। पिछले एक साल से पीड़ति का परिवार न्याय के लिए भटक रहा है।

नरसिंहानंद गिरी का खून से लिखा पत्र मुख्यमंत्री को देने से रोका

महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरी महाराज के शिष्य डासना देवी मंदिर से मुख्यमंत्री के नाम उनके खून से लिखे पत्र को लेकर मुख्यमंत्री आवास रवाना होने वाले थे। बृहस्पतिवार को पुलिस ने खून से लिखे पत्र मुख्यमंत्री को देने से पुलिस ने रोक दिया।

नरसिंहानंद ने आरोप लगाया कि उनके शिष्य यति निर्भयानंद, यति रणसिंहानंद, यति असीमानंद और यति सत्यानंद को जबर्दस्ती रोक कर पुलिस ने जेल में डालने की धमकी दी। पुलिस अधिकारियों ने शिवशक्ति धाम में बुलडोजर चलाकर उजाड़ने को कहा। पुलिस अधिकारियों ने महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरी महाराज को आशाराम बापू और राम रहीम बनाने की धमकी दी।

पड़ोसी का विरोध करना भाजपा नेता को पड़ा महंगा: मारपीट कर नलकूप में बनाया बंधक, खेत की बाउंड्री पर लगे खंभे-तार

नलकूप से शोर मचाने पर वह वहां पहुंचे और उन्हें बाहर निकाला। उन्होंने बताया कि उन्हें डर है कि आरोपी उन्हें तथा उनके परिवार के साथ कोई भी अनहोनी घटना को अंजाम दे सकते हैं।

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के सलेमपुर थाना क्षेत्र के गांव सुरजावली निवासी भाजपा नेता ऋषिपाल शर्मा को उनके खेत की बाउंड्री तोड़ रहे पड़ोसी काश्तकार का विरोध करना महंगा पड़ गया। पड़ोसी ने पुत्र के साथ मिलकर भाजपा नेता की पिटाई की और उन्हीं के नलकूप में लोहे की पाइप से बांधकर बंधक बना लिया। साथ ही आरोपी उनके खेत की बाउंड्री पर लगे सीमेंट के खंभे और तार लूट कर ले गए। सलेमपुर थाना क्षेत्र के गांव सुरजावली निवासी भाजपा नेता ऋषिपाल शर्मा खेतीबाड़ी करते हैं। 25 सितंबर की

सुबह वह अपने खेतों पर घूमने गए थे। हुर्थला बंबे की पटरी पर जब वह अपने बाग के चारों ओर घूम रहे थे। उसी दौरान बाग की एक तरफ पड़ोसी काश्तकार अपने पुत्र के साथ उनके खेत की बाउंड्री के सीमेंट के खंभों और तार को तोड़ रहे थे।

विरोध करने पर दोनों ने गाली-गलौज करते हुए उन पर लाठी से हमला कर दिया। बाद में उन्हें उन्हीं के नलकूप में लोहे की पाइप से बांध दिया। शोर मचाने पर आरोपियों ने उन्हें जान से मारने की धमकी दी। उन्होंने बताया कि आरोपी पिता-पुत्र उनके खेत की बाउंड्री के खंभे व तार को लूट कर ले गए। उनके काफी देर तक घर न पहुंचने पर भाई वेद प्रकाश और बेटा गौरव शर्मा बाग में पहुंचे।

नलकूप से शोर मचाने पर वह वहां पहुंचे और उन्हें बाहर निकाला। उन्होंने बताया कि उन्हें डर है कि आरोपी उन्हें तथा उनके परिवार के साथ कोई भी अनहोनी घटना को अंजाम दे सकते हैं। सीओ शिकारपुर दिलीप कुमार सिंह ने बताया कि ऋषिपाल शर्मा की तहरीर पर थाना पुलिस ने गांव पूठरी खुर्द निवासी विजय और उसके पुत्र दीपक के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है। जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

विशेष अभियान में अब तक दुरुस्त किए 375 मैनहोल

18 से 24 सितंबर तक नगर निगम चला रहा है मैनहोल फ्री अभियान

गुरुग्राम। टूटे हुए मैनहोल के ढक्कन और अन्य समस्याओं आदि को दुरुस्त करने के लिए चलाए जा रहे विशेष मैनहोल फ्री अभियान के तहत अब तक शहरी क्षेत्र में आठ डिवीजन में 375 मैनहोल सही कर लिए गए हैं। अभियान 24 सितंबर तक चलेगा। नगर निगम का उद्देश्य है कि 24 सितंबर के बाद क्षेत्र में कोई भी मैनहोल का ढ़क्कन टूटा न हो।

18 सितंबर से शुरू हुए इस विशेष अभियान के तहत अब तक 375 मैनहोल कवर को बदला गया है। इनमें डिवीजन-1 में 115, डिवीजन-2 में 36, डिवीजन-3 में 30, डिवीजन-4 में 20, डिवीजन-5 में 22, डिवीजन-6 में 29, डिवीजन-7 में 77 तथा डिवीजन-8 में 46 मैनहोल सही करने का कार्य शामिल है। सभी जगहों पर टूटे मैनहोल को सही करके उनके ढक्कन बदलने ने काम को पूरा करने के लिए अलग-अलग टीमें काम कर रही हैं। नगर निगम के आयुक्त पीसी मीणा ने गत दिनों अधिकारियों के साथ की गई मासिक बैठक में निर्देश दिए गए थे कि निगम क्षेत्र में किसी भी मैनहोल का ढ़क्कन टूटा हुआ नहीं होना चाहिए। अभियान के तहत सभी कार्यकारी अभियंता अपने-अपने डिवीजन में काम करवा रहे हैं।

पर्यटन ही है शांति एवं जीवन मुस्कान का जरिया

ललित गर्ग

भारत एक विविधतापूर्ण पर्यटन संभावनाओं एवं समृद्धि वाला देश है और यह सांस्कृतिक, प्रकृति, विरासत, शैक्षिक, खेल, ग्रामीण, पर्यावरण-पर्यटन आदि सहित कई प्रकार के पर्यटन प्रदान करता है। भारत की यह विविधता इसे पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण बनाती है।

विश्व पर्यटन दिवस हर साल 27 सितंबर को मनाया जाता है। वर्ष- 2023 की विश्व पर्यटन दिवस की थीम 'पर्यटन और हरित निवेश' है। हर साल यूनाइटेठ नेशन वर्ल्ड टूरिज्म ओरगेनाइजेशन द्वारा किसी एक देश को पर्यटन दिवस की मेजबानी के लिए चुना जाता है, 2023 में 'रियाद, सऊदी अरब साम्राज्य' इस महत्वपूर्ण दिन के कार्यक्रमों की मेजबानी कर रहा है। पिछली साल 2022 में बाली, इंडोनेशिया को मेजबान देश (होस्टिंग कंट्री) चुना गया था। आज विश्वस्तर पर युद्ध की स्थितियां गहराई हुई है, हर व्यक्ति महंगाई, बेरोजागारी, बीमारी, महामारी आदि किसी-ना-किसी परेशानी से घिरा हुआ है, भय और जीवनसंकट के इस दौर में ऐसा लगता है मानो खुशी एवं मुस्कान तो कहीं गुम हो गई है। बावजूद इन सबके हर व्यक्ति को अपने जीवन में कुछ समय ऐसा जरूर निकालना चाहिए जिसमें खुशी, शांति एवं प्रसन्नता के पल जीवंत हो सके, इसका सशक्त माध्यम है पर्यटन। खुशियों एवं शांतिपूर्ण जीवन को गले लगाने के लिये पर्यटन पर जरूर निकलना चाहिए।

पर्यटन सिर्फ हमारे जीवन में खुशियों के पलों को वापस लाने में ही मदद नहीं करेगा बल्कि यह किसी भी देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का माध्यम भी बनेगा। अनेक कारणों से दुनिया में आर्थिक संकट के बादल मंडरा रहे हैं, इन हालातों हर देश की पहली जरूरत अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है उसमें पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। क्योंकि कई देशों की अर्थव्यवस्था पर्यटन-उद्योग के इर्द-गिर्द घूमती रही है। यूरोपीय देश, तटीय अफ्रीकी देश, पूर्वी एशियाई देश, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और भारत आदि ऐसे देश हैं जहां पर पर्यटन उद्योग से प्राप्त आय वहां की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है। भारत ने अतीत में अपने कल्पित धन, सांस्कृतिक वैभव, प्रकृति एवं मनोरम छटाओं के कारण बहुत से विदेशी यात्रियों को आकर्षित किया। चीनी बौद्ध धर्मनिष्ठ ह्वेनसांग की यात्रा इसका एक उदाहरण है। तीर्थ यात्रा को सम्राट अशोक और सम्राट हर्ष ने बल देने के लिये अनेक निर्माण करवाये। भारतीय अर्थशास्त्र सरकारों के लिये पर्यटन क्षेत्र के बुनियादी ढाँचे के महत्त्व को इंगित करता है, जिसने अतीत में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता के पश्चात पर्यटन क्षेत्र लगातार पंचवर्षीय योजनाओं का हिस्सा बना रहा है। सातवीं पंचवर्षीय योजना के बाद भारत में पर्यटन के विभिन्न रूप जैसे- व्यापार पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन और वन्यजीव पर्यटन आदि प्रस्तुत किये गए। वर्ष 2021 में विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद की रिपोर्ट में 178.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर के योगदान के साथ भारत का पर्यटन क्षेत्र विश्व सकल घरेलू उत्पादन (जीडीपी) में अपने योगदान में छठे स्थान पर है।

भारत एक विविधतापूर्ण पर्यटन संभावनाओं एवं समृद्धि वाला देश है और यह सांस्कृतिक, प्रकृति, विरासत, शैक्षिक, खेल, ग्रामीण, पर्यावरण-पर्यटन आदि सहित कई प्रकार के पर्यटन प्रदान करता है। भारत की यह विविधता इसे पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण बनाती है। भारत में पर्यटन में तेज़, अधिक टिकाऊ और अधिक समावेशी विकास को बढ़ावा देने की क्षमता है। विश्व पर्यटन दिवस के लिए 27 सितंबर का दिन चुना गया क्योंकि इसी दिन 1970 में विश्व पर्यटन संगठन का संविधान स्वीकार किया गया था। पर्यटन दिवस को वैश्विक पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयास हेतु मील के पत्थर के रूप में देखा जाता है एवं इस दिवस को मनाने का उद्देश्य विश्व में इस बात को प्रसारित तथा जागरूकता फैलाने के लिए हैं कि किस प्रकार पर्यटन वैश्विक रूप से दुनिया को एक परिवार के रूप में विकसित करते हुए सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक मूल्यों को तथा आपसी समझ बढ़ाने में सहायता कर सकता है। यह विश्व शांति का मुख्य आधार है। भारत जैसे देशों के लिए पर्यटन का खास महत्व है। देश की पुरातात्विक विरासत या सांस्कृतिक धरोहर केवल दार्शनिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थल के लिए नहीं है बल्कि यह राजस्व प्राप्ति का भी स्रोत है। पर्यटन क्षेत्रों से कई लोगों की रोजी-रोटी भी जुड़ी है। आज भारत जैसे देशों को देखकर ही विश्व के लगभग सभी देशों में पुरानी और ऐतिहासिक इमारतों का संरक्षण, संवर्द्धन किया जाने लगा है।

भारत असंख्य पर्यटन अनुभवों और मोहक स्थलों का देश है। चाहे भव्य स्मारक हों, प्राचीन मंदिर या मकबरे हों, नदी-झरने, प्राकृतिक मनोरम स्थल हो, इसके चमकीले रंगों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रौद्योगिकी से चलने वाले इसके वर्तमान से अटूट संबंध है। केरल, शिमला, गोवा, आगरा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, मथुरा, काशी जैसी जगहें तो अपने विदेशी पर्यटकों के लिए हमेशा चर्चा में रहती हैं। भारत में अपने लोगों के साथ लाखों विदेशी लोग प्रतिवर्ष भारत घूमने आते हैं। यहां सभी प्रकार के पर्यटकों को चाहे वे साहसिक यात्रा पर हों, सांस्कृतिक यात्रा पर या वह तीर्थयात्रा करने आए हों या खूबसूरत समुद्री-तटों की यात्रा पर निकले हों, सबके लिए खूबसूरत जगहें हैं। दिल्ली, मुंबई, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दक्षिण भारत के अनेक

राज्यों में तो लोगों को घूमते-घूमते महीना बीत जाते हैं।

भारत अपनी सुंदरता के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। भारत में विभिन्न संप्रदाय-धर्म और जाति के लोग एक साथ मिलकर रहते हैं। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक धरोहर के कारण भारत दुनिया के प्रमुख पर्यटन देशों में शुमार होता है। यहां के हर राज्य की अलौकिक और विलक्षण विशिष्टताएं हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। उन पर्यटकों के लिए भारत-यात्रा का विशेष आकर्षण है जो शांत, जादुई, सौंदर्य और रोमांच की तलाश में रहते हैं। इन पर्यटकों के लिये भारत में विपुल यात्रा साहित्य अपनी एक विशेष पहचान और उपयोगिता को लेकर प्रस्तुत होता रहा है। अब तक यात्रा साहित्य की दृष्टि से राहुल सांकृत्यायन का 'मेरी तिब्बत यात्रा', डॉ. भगवतीशरण उपाध्याय का 'सागर की लहरों पर', कपूरचंद कुलिश का 'मैं देखता चला गया', धर्मवीर भारती का 'ढेले पर हिमालय' तथा नेहरू का 'आंखों देखा रूस', रामेश्वर टांटिया का 'विश्व यात्रा के संस्मरण', आचार्य तुलसी का यात्रा साहित्य की ही भांति मेरे मित्र श्री पुखराज सेठिया का 'आओ घूमे अपना देश' एक मार्मिक और रोचक यात्रा-वृतांत है। इन यात्रा ग्रंथों में तथ्यपरकता, भौगोलिकता, रोचकता, सरसता और सहजता आदि यात्रा-वृत्त के सभी गुण समाहित हैं। इन ग्रंथों के कारण देश की इन विविधताओं ने ही देश एवं दुनिया के अनेक यायावरी लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। इन यायावरी पुरुषों के जीवन का लक्ष्य जीवन की आपाधापी, भागदौड़ से हटकर प्रमुख पर्यटन स्थलों के बीच जीवन के मायने ढूंढ़ना रहा है। इसी सत्य की खोज ने उन्हें ऐसे-ऐसे ऐतिहासिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक स्थलों से साक्षात्कार करवाया है। इन यात्रा-ग्रंथों में केवल प्रमुख दर्शनीय स्थलों का वर्णन नहीं है बल्कि वहां के लोगों, वहां के खान-पान, वहां की जीवनशैली, वहां के सांस्कृतिक मूल्य, वहां के ऐतिहासिक तथ्य का भी जीवंत प्रस्तुतीकरण है। यह भारत पल-पल परिवर्तित, नितनूतन, बहुआयामी और इन्द्रजाल की हद तक चमत्कारी यथार्थ से परिपूर्ण है। इस भारत की समग्र विविधताओं, नित नवीनताओं और अंतर्विरोधों से साक्षात्कार करना सचमुच अलौकिक एवं विलक्षण अनुभव है। जिससे इस बहुरूपी भारत को उसके बहुआयामी और निहंग वास्तविक रूप में देखा जा सके और ऊबड़-खाबड़ अनगढ़ता की परतों में छिपी सुंदरता को उद्घाटित किया जा सके।

हम भारत को एक गुलदस्ते की भांति अनुभव करते हैं, एक ऐसा गुलदस्ता जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्प सुसज्जित हैं। किसी फूल में कश्मीर की लालिमा है तो किसी में कामरूप का जादू। कोई फूल पंजाब की कली संजोए हैं, तो किसी में तमिलनाडु की किसी श्यामा का तरन्नुम। किसी में राजस्थान के बलिदान की गाथाएं है तो किसी में उत्तरप्रदेश की धार्मिकता। महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल और अन्य प्रदेशों में तो विविधता में सांस्कृतिक एकता के दर्शन होते हैं। इसी भांति जैसलमेर में पर्यटन से हटकर वहां संग्रहीत प्राचीन पांडुलिपियों की विशद् जानकारी, स्थापत्य कला एवं जैन दर्शनीय स्थलों का अनुभव भी अनूठा है। भारतीय पर्यटन विभाग ने 'अतुल्य भारत' नाम से अभियान चलाया था। इस अभियान का उद्देश्य भारतीय पर्यटन को वैश्विक मंच पर प्रोत्साहित करना था जो काफी हद तक सफल हुआ। सिमटती दूरियों के बीच लोग बाहरी दुनिया के बारे में भी जानने के उत्सुक रहते हैं। यही कारण है कि आज दुनिया में टूरिज्म एक फलता फूलता उद्योग बन चुका है।

इन इलेक्ट्रिक स्कूटर में मिलता है भरपूर सामान रखने का स्पेस ओला से लेकर हीरो तक इस लिस्ट में शामिल

आज हम आपके लिए बेस्ट बूट स्पेस से लैस इलेक्ट्रिक स्कूटर की लिस्ट लेकर आए हैं इंडियन मार्केट में सबसे ज्यादा बूट स्पेस के साथ ही ये इलेक्ट्रिक स्कूटर आता है । इस स्कूटर में कुल 43 लीटर का बूट स्पेस मिलता है सेफ्टी के मामले में भी यह काफी दमदार है। भारतीय बाजार में सबसे अधिक सेल इलेक्ट्रिक स्कूटर में ओला की ही होती है ।

आज के समय में आसपास जाने के लिए इलेक्ट्रिक स्कूटर सबसे बेस्ट ऑप्शन है । इसमें न केवल आपके पैसों की बचत होती है बल्कि समय की भी बचत होती है। अगर आप अपनी इलेक्ट्रिक स्कूटर से कहीं भी आते जाते हैं और सामान रखने की आपको आदत है तो आज हम आपके लिए बेस्ट बूट स्पेस से लैस इलेक्ट्रिक स्कूटर की लिस्ट लेकर आए हैं। इंडियन मार्केट में सबसे ज्यादा बूट स्पेस के साथ ही ये इलेक्ट्रिक स्कूटर आता है । इस स्कूटर में कुल 43 लीटर का बूट स्पेस मिलता है सेफ्टी के मामले में भी यह काफी दमदार है। इसके साथ ही इसकी रेंज भी काफी बढ़िया है।

ओला एस 1 प्रो

भारतीय बाजार में सबसे अधिक सेल इलेक्ट्रिक स्कूटर में ओला की ही होती है ।आपको बता दे इस इलेक्ट्रिक स्कूटर में आपको कल 36 लीटर का बूट स्पेस मिल जाएगा।

ओला एस1 प्रो जेन 2 एयर

हमारी लिस्ट में तीसरे नंबर पर ओला का ही स्कूटर है। यह नए और शानदार टेक्नोलॉजी से लैस है इसमें आपको काफी स्टोरेज भी मिल जाता है। इस स्कूटर में कुल 34 लीटर का स्टोरेज मिलता है।

सिम्पल वन

यह इलेक्ट्रिक स्कूटर खोल दो बैटरी बैक के साथ आता है इसके बाद भी इस स्कूटर में आपको अच्छा खासा स्पेस मिल जाता है। इसमें कुल 30 लीटर का बूट स्पेस मिलता है।

हीरो वीदा वी 1

हीरो का यह सबसे के फायदे इलेक्ट्रिक स्कूटर है इस इलेक्ट्रिक स्कूटर में आपको 26 लीटर तक का बूट स्पेस मिल जाएगा। स्टोरेज को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि आप इसमें आराम से एक हेलमेट तो रख ही सकते

ये हैं सबसे ज्यादा बिकने वाले टॉप-5 ईवी ब्रांड पिछले महीने बेचीं इतनी इलेक्ट्रिक कारें

इस साल इलेक्ट्रिक फोर-व्हीलर सेगमेंट में बढ़ोतरी देखी जा रही है। देश के लिए स्वच्छ और हरित परिवहन भविष्य बनाने के लक्ष्य के साथ चार पहिया वाहनों के इलेक्ट्रिफिकेशन के साथ यह तेजी पर है। हालांकि, अगस्त 2023 में इलेक्ट्रिक चार-पहिया वाहनों की बिक्री में काफी गिरावट आई। इस सेगमेंट में पिछले महीने की तुलना में 13 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। यहां हम आपको बता रहें हैं कि अगस्त 2023 में किन वाहन निर्माताओं ने सबसे ज्यादा इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री की।

Tata Nexon EV Facelift -

टाटा मोटर्स ने अगस्त 2023 में भी मार्केट लीडर की स्थिति बरकरार रखी। उसके बाद एमजी मोटर्स और महिंद्रा एंड महिंद्रा का स्थान रहा। यानी टॉप-3 पोजिशन पहले की तरह बरकरार हैं। इस बीच, ह्यूंदै मोटर्स और पीसीए ऑटोमोबाइल्स ने क्रमशः चौथी और पांचवीं पोजिशन हासिल की।

Tata Tiago EV -

टाटा मोटर्स ने हाल ही में अपनी इलेक्ट्रिक कारों के लिए अलग प्लेटफार्म Tata.ev की शुरुआत की है। इसके तहत कंपनी अपनी तीन इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री करती है। जिनके साथ पिछले महीने टाटा मोटर्स ने 4,613 इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री की। जो कि इस सेगमेंट में सबसे ज्यादा है।

MG Comet EV

सबसे ज्यादा इलेक्ट्रिक वाहन बेचने वाले वाहन निर्माताओं की सूची में एमजी मोटर्स दूसरे नंबर रही। अगस्त के महीने में कंपनी अपने इलेक्ट्रिक कारों की 1,150 यूनिट्स की बिक्री करने में कामयाब रही। एमजी मोटर इस समय भारतीय बाजार में दो इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री करती है। जिनमें पहली एमजी जेडएस ईवी और दूसरी एमजी कॉमेट है, जो इस समय सबसे किफायती इलेक्ट्रिक कार भी है।

Mahindra XUV400 -

इस सूची में महिंद्रा एंड महिंद्रा तीसरे नंबर पर रही। वाहन निर्माता ने पिछले महीने 376 यूनिट्स इलेक्ट्रिक कारें बेचीं। महिंद्रा इस समय भारतीय बाजार में फिलहाल एकमात्र इलेक्ट्रिक कार महिंद्रा एक्सयूवी400 की बिक्री करती है।

Hyundai Kona Electric

चौथे नंबर पर ह्यूंदै मोटर काबिज हुई। वाहन निर्माता इस समय कोना इलेक्ट्रिक और आयोनिक 5 इलेक्ट्रिक एसयूवी बेचती है। कंपनी इन दोनों ईवी की 182 यूनिट्स की बिक्री करने में सफल रही।

eC3 -

सबसे ज्यादा इलेक्ट्रिक गाड़ियों की बिक्री करने वाले वाहन निर्माताओं की सूची में पांचवे नंबर पर सिट्रोएन रही। अगस्त के महीने में कंपनी ने भारत में अपनी इलेक्ट्रिक कार सिट्रोएन ईसी3 की 111 यूनिट्स की बिक्री की है।

फिर से टेस्टिंग के दौरान स्पॉट हुई टाटा पंच ईवी

टाटा पंच इलेक्ट्रिक कार में 2 बैटरी पैक दिए जाने की उम्मीद है और इससे अनुमानित 300 व 350 किमी की रेंज मिल सकती है। टाटा पंच ईवी को 2024 की शुरुआत में लॉन्च हो सकती है

टाटा पंच ईवी को लॉन्च से पहले कई बार टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया है। एक बार फिर से कार स्पॉट की गई है। हालांकि इस बार इसके एक्सटीरियर और इंटीरियर की तस्वीरें सामने आई हैं। सामने आए स्पॉई शॉट्स को देखते हुए कहा जा सकता है।

टाटा पंच ईवी को लॉन्च से पहले कई बार टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया है। एक बार फिर से कार स्पॉट की गई है। हालांकि इस बार इसके एक्सटीरियर और इंटीरियर की तस्वीरें सामने आई हैं। सामने आए स्पॉई शॉट्स को देखते हुए कहा जा सकता है कि इसमें 5 इंच के अलॉय व्हील्स, स्लिम डीआरएल और बंपर पर बड़े एलईडी हेडलैंप्स दिए जा सकते हैं। वही ऐसे संकेत मिलते हैं कि इसमें नए डिज़ाइन के एयरोडैम, ईवी स्पेसिफिक ब्लू डिज़ाइन एलिमेंट्स भी शामिल होने की संभावना है।

इसके अलावा इंटीरियर में 10.25-इंच यूनिट, बैकलिट टाटा लोगो के साथ नया टू-स्पोक स्टीयरिंग व्हील मिल सकता है। फीचर लिस्ट में सेमी-डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, छह एयरबैग, ईबीडी के साथ एबीएस, इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल (ईएसपी), टायर मॉनिटरिंग सिस्टम (टीपीएमएस) और रियरव्यू कैमरा मिलने की उम्मीद है।

टाटा पंच इलेक्ट्रिक कार में 2 बैटरी पैक दिए जाने की उम्मीद है और इससे अनुमानित 300 व 350 किमी की रेंज मिल सकती है। टाटा पंच ईवी को 2024 की शुरुआत में लॉन्च हो सकती है और इसकी संभावित कीमत 12 लाख रुपए की हो सकती है। राइवल्स के मामले में इसका मुकाबला सिट्रोएन सी3 से है।

पाकिस्तान से बातचीत का सवाल

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

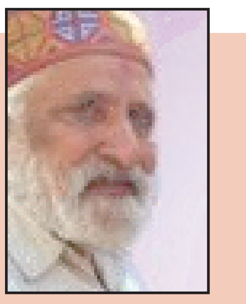

पिछली बार बातचीत करने के लिए नेहरू ने शेख मोहम्मद अब्दुल्ला को भेजा था, इस बार उन्हीं के पुत्र और पौत्र फारूक अब्दुल्ला और उमर अब्दुल्ला को भेजा जा सकता है। इतना ही बातचीत का एजेंडा उन्हें स्पष्ट रहना चाहिए'

शेख मोहम्मद अब्दुल्ला को 1964 में जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर पाकिस्तान से गोलमेज कान्फ्रेंस करने के लिए पाकिस्तान भेजा था। इसकी चर्चा यथास्थान की जाएगी। अब श्रीनगर की जामिया मस्जिद के मीरवाइज सैयद उमर फारूक ने आग्रह किया है कि कश्मीर के मसले पर पाकिस्तान से बातचीत कर लेनी चाहिए। वे काफी लम्बे अरसे बाद 22 सितम्बर 2023 को मस्जिद में आए थे। वे इस मस्जिद से अपने भक्तों को प्रायः सम्बोधित करते रहते हैं और उन्हें दिशा निर्देश भी देते रहते हैं। मीर का अर्थ मुख्य होता है जिसे अंग्रेजी में चीफ भी कह सकते हैं। वाइज का अर्थ प्रचारक है। लेकिन यहां प्रचारक का अर्थ इस्लाम का प्रचारक है। मीरवाइज यानी इस्लाम का मुख्य प्रचारक। मीरवाइज मस्जिद में मुसलमान बच्चों को मजहब की शिक्षा भी देते हैं। लेकिन पिछले आठ नौ दशकों में उन्होंने कश्मीर की राजनीति में भी सक्रिय भूमिका निभानी शुरू कर दी है। 1931 में मुस्लिम कान्फ्रेंस की स्थापना में भी एक मीरवाइज का ही हाथ था।

श्रीनगर में दो मीरवाइज हैं। एक तो जामिया मस्जिद के मीरवाइज हैं और दूसरे खानगाहे मौला के मीरवाइज हैं। उन्हें मीरवाइज हमदानी भी कहा जाता है। लेकिन इन दोनों मीरवाइजों के पूर्वज सैयद अली हमदानी हैं। हमदानी ईरान में तैमूरलंग के सताए हुए थे। उसी के डर से वे भागकर कश्मीर आ गए थे। लेकिन अब सैयद अली हमदानी की संतानें दो भागों में बंट चुकी हैं। एक जामिया मस्जिद में मीरवाइज है और दूसरा खानगाहे मौला में मीरवाइज है। इतना लम्बा कालखंड गुजर जाने के कारण, अब ये परस्पर विरोधी ही नहीं हैं, बल्कि कई बार इनके भक्त आपस में मारपीट भी करते हैं। ये दोनों मीरवाइज मुसलमानों की अशरफ/एटीएम श्रेणी से आते हैं। मुसलमानों की अशरफ या एटीएम श्रेणी में अरब, तुर्क व मुगल मंगोल मूल के मुसलमान आते हैं। कश्मीर विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष रहे स्व. बशीर अहमद डाबला इन्हें मुस्लिम्ज ऑफ फारेन ओरिजन कहते हैं। कश्मीर में मुसलमानों का दूसरा बहुत बड़ा समूह डीएम या देसी मुसलमानों का है। ये स्थानीय लोग हैं जो पिछले छह सौ सालों में किन्हीं भी कारणों से अपनी विरासत छोड़ कर इस्लाम पंथ में चले गए थे। पिछले दिनों जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद ने यह बात कही भी थी। आजाद देसी मुसलमानों की जमात से ताल्लुक रखते हैं। अशरफ मुसलमान देसी मुसलमानों को अलजाफ/पसमांदा, अरजाल न जाने क्या क्या कहते हैं। कश्मीर घाटी में मीरवाइजों को एटीएम/अशरफ मूल के मुसलमानों का नेता भी माना जाता है। एटीएम और डीएम में प्रायः झगड़ा भी होता रहता है। कई बार तो झगड़ा जरूरत से ज्यादा भी बढ़ जाता है।

कई दशक पहले झगड़ा उतना बढ़ गया था कि कश्मीर के देसी मुसलमानों ने स्वयं को शेर और मीरवाइज के अशरफ मुसलमानों को बकरा कहना शुरू कर दिया था। परोक्ष रूप से शेर-बकरा का यह झगड़ा किसी न किसी रूप में आज तक चला हुआ है। 1947 में जामिया मस्जिद के मीरवाइज मोहम्मद यूसुफ शाह भाग कर पाकिस्तान चले गए थे। पाकिस्तान सरकार ने उन्हें तथाकथित आजाद कश्मीर का राज्यपाल भी बनाए रखा। उस वक्त कश्मीर के देसी मुसलमानों ने आवाज भी उठाई थी कि अब मीरवाइज का पद किसी देसी मुसलमान को मिलना चाहिए। लेकिन यह पद आज तक परम्परागत ही चला आ रहा है। वर्तमान मीरवाइज सैयद उमर फारूक के पिता को आतंकवादियों ने गोली से उड़ा दिया था। वे वैसे तो आतंकवादियों की बोली ही बोलते थे, लेकिन बीच में उन्होंने पाकिस्तान द्वारा निर्धारित रास्ते से एक दो कदम अलग से चलने की कोशिश की थी, जिसका खमियाजा उन्हें भुगतना पड़ा। उमर फारूक लम्बे अन्तराल के बाद 22 सितम्बर 2023 को जामा मस्जिद में अपने श्रद्धालुओं के बीच पहुंचे थे। रिकार्ड के लिए वे अभी भी तथाकथित हुर्रियत कान्फ्रेंस के अध्यक्ष हैं। वहां उन्होंने कश्मीर की आजकल की राजनीति को लेकर भी सुझाव दिए। उनका मानना था कि कश्मीरी हिन्दू वापस कश्मीर में आ सकें, इसके लिए माहौल बनाना चाहिए। उनका कहना था कि कश्मीर को लेकर पाकिस्तान से बात करनी चाहिए। ऐसा सुझाव पिछले दिनों फारूक अब्दुल्ला और उनके सुपुत्र उमर अब्दुल्ला भी दे चुके हैं।

यहां तक कि पीडीपी की अध्यक्षा सैयदा महबूबा मुफ्ती भी यही बात कह चुकी हैं। इन लोगों का यह सुझाव सचमुच काम का है और ये लोग इसमें महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा सकते हैं। जम्मू कश्मीर व लद्दाख का बहुत बड़ा हिस्सा पाकिस्तान ने बलपूर्वक अपने कब्जे में रखा हुआ है। उसको लेकर पाकिस्तान से तीन लड़ाइयां भी हो चुकी हैं। लेकिन उसके बावजूद जम्मू कश्मीर व लद्दाख का वह हिस्सा मुक्त नहीं करवाया जा सका। सभी मानते हैं कि लड़ाई की बजाय शान्ति से मसलों का हल होना चाहिए। यदि पाकिस्तान बलपूर्वक कब्जाए गए हिस्से शान्तिपूर्ण तरीके से छोड़ दे तो मसले का इससे बेहतर क्या हल हो सकता है? लड़ाई के मैदान में जाने की बजाय मेज पर बैठ कर पाकिस्तान से इस विषय पर बातचीत कर लेनी चाहिए कि वह प्रदेश के कब्जाए गए हिस्से पर कब्जा कब छोड़ेगा। लेकिन पाकिस्तान से बातचीत करने से पहले वार्ताकारों को स्वयं कम से कम दो तथ्य स्पष्ट होने चाहिए। पहला तो यह कि पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर और लद्दाख के कुछ हिस्से पर 1947 से कब्जा किया हुआ है। दूसरा यह कि पाकिस्तान से बातचीत करते समय एजेंडा क्या होना चाहिए। जहां तक पहले तथ्य का सवाल है, तो मीरवाइज, सैयदा महबूबा मुफ्ती, फारूक अब्दुल्ला व उमर अब्दुल्ला इतना तो जानते ही होंगे कि पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर और लद्दाख के कुछ हिस्सों पर कब्जा किया हुआ है। मीरवाइज के पितामह पाकिस्तान में जाकर तथाकथित आजाद कश्मीर के सदर हो गए थे। अब्दुल्ला और मुफ्ती प्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। प्रदेश के मानचित्र से ही पता चल गया होगा कि पाकिस्तान ने कितना हिस्सा हड़पा हुआ है। दूसरा प्रश्न है बातचीत के एजेंडे का। यह एजेंडा भारत की संसद ने दशकों पहले नियत कर दिया था। संसद ने प्रस्ताव पारित किया हुआ है, जिसमें मुफ्ती और अब्दुल्ला दोनों परिवारों की हिस्सेदारी है, कि पाकिस्तान से कब्जाया गया जम्मू कश्मीर का हिस्सा उससे मुक्त करवाना है।

ऐसा नहीं कि भारत ने कश्मीर को लेकर इससे पहले पाकिस्तान से बातचीत का प्रयास नहीं किया। फारूक अब्दुल्ला तो जानते ही हैं कि 1964 में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने उनके पिता मरहूम शेख मोहम्मद अब्दुल्ला को बातचीत के लिए पाकिस्तान भेजा था। लेकिन तब भारत ने देशी विदेशी शक्तियों के दबाव या बहकाने में आकर अपने एजेंडे में परिवर्तन कर लिया था। यह परिवर्तन था कि जम्मू कश्मीर का जितना हिस्सा पाकिस्तान के पास है, वह उसी के पास रहने दिया जाए और वास्तविक नियंत्रण रेखा को दोनों देशों के बीच अंतरराष्ट्रीय सीमा मान लिया जाए। लेकिन कुदरत को ही शायद एजेंडा में यह परिवर्तन मंजूर नहीं था। शेख अब्दुल्ला पाकिस्तान के राष्ट्रपति मोहम्मद अयूब से इस एजेंडे पर बातचीत कर ही रहे थे कि पंडित नेहरू का देहान्त हो गया। तब से लेकर अब तक हालात में अनेकों परिवर्तन हो गए। पाकिस्तान ही टूट गया। पूर्वी बंगाल उससे अलग हो गया। बलूचिस्तान व खैबर पख्तूनिस्तान अलग होने की कोशिश में लगे हैं। जम्मू कश्मीर को लेकर भारत भी मूल एजेंडे पर पहुंच गया है। संसद में प्रस्ताव पास कर इसे स्पष्ट भी कर दिया है। इस एजेंडे पर पाकिस्तान गोलमेज कान्फ्रेंस करने में कोई नुक्सान नहीं है। पिछली बार बातचीत करने के लिए नेहरू ने शेख मोहम्मद अब्दुल्ला को भेजा था, इस बार उन्हीं के पुत्र और पौत्र फारूक अब्दुल्ला और उमर अब्दुल्ला को भेजा जा सकता है। बस इतना ही बातचीत का एजेंडा उन्हें स्पष्ट रहना चाहिए। वैसे इस डेलीगेशन में मीरवाइज और महबूबा मुफ्ती को भी ले लेना चाहिए।

संपादक की कलम से

भारत की चैंपियन बेटियां

सिफ्ट कौर सामरा 50 मीटर राइफल की निशानेबाजी की नई एशियाई चैम्पियन बनी हैं, लेकिन वह विश्व चैम्पियन भी हैं, क्योंकि उन्होंने एक साथ विश्व रिकॉर्ड और एशियन रिकॉर्ड स्थापित कर स्वर्ण पदक जीता है। उन्होंने 469.6 अंक हासिल कर विश्वकीर्तिमान रचा है। 1986 में सोमा दत्ता ने इसी 3 पोजिशन में, सियोल एशियन खेलों में, रजत पदक जीता था, लिहाजा ऐसी कामयाबी वाली, सभी वर्गों में, वह भारत की प्रथम निशानेबाज हैं। सिफ्ट ने टीम स्पर्धा में भी रजत पदक हासिल किया है। हांगझोउ एशियन खेलों का चौथा दिन, भारत के लिहाज से, बेहद खुशगवार रहा। पदकों की खूब बौछार हुई। सिफ्ट के अलावा ईशा सिंह, मनु भाकर, रिद्म सांगवान की तिकड़ी ने भी 25 मीटर पिस्टल की टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। आशी सिंह, माणिनी सरीखी पदकवीर बेटियों का नाम भी विजेताओं की श्रेणी में रखा जाएगा। भारत की इन सामान्य-सी बेटियों ने आसमान छूकर 'मां भारती' को सम्मानित किया है और खुद को 'असाधारण' साबित किया है। एशियन खेल या राष्ट्रमंडल खेलों के मुकाबले हों अथवा विश्व चैंपियनशिप, ओलंपिक के मैदान हों, खेलों में प्रतिद्वंद्विता गला-काट होती है। एक-एक अंक के लिए जद्दोजहद की जाती है। भारत की बेटी सिफ्ट ने, 7.3 अंकों के फासले से, चीनी खिलाड़ी को मात देकर विश्व कीर्तिमान अपने नाम किया है।

ब्रिटेन के नाम पुराने कीर्तिमान को पोंछ दिया है। यकीनन यह गगनचुंबी सफलता और उपलब्धि है। गौरतलब तो यह है कि फरीदकोट (पंजाब) के एक किसान घर और चावल का कारोबार करने वाले परिवार की बेटी सिफ्ट की प्राथमिकता निशानेबाजी नहीं थी। वह एमबीबीएस की छात्रा है। जाहिर है कि 'डॉक्टर साहिबा' बनने की राह पर हैं, लिहाजा सिफ्ट खुद को 'आकस्मिक निशानेबाज' मानती हैं। मेडिकल से मेडल तक की यात्रा 22 वर्षीय बेटी के लिए बड़ी असमंजस भरी रही होगी, लेकिन सिफ्ट ने माता-पिता की सलाह पर 'निशानेबाज' बनना तय किया। आज वह जिस मुकाम पर हैं, खुद इतिहास लिख रही हैं। 25 मीटर पिस्टल की रजत पदक विजेता ईशा सिंह को हरेक गोली की आवाज 'संगीत का सुर' लगती है। मनु भाकर एक विख्यात नाम है, लेकिन वह टोक्यो ओलंपिक समेत कुछ प्रतियोगिताओं में असफल रही थीं, लेकिन इस बार गले में 'पीलातमगा' पहनकर, ऊपर उठते 'तिरंगे' को देखते हुए, राष्ट्रगान सुनकर प्रसन्न होंगी। दरअसल खेल की दुनिया में ऐसी बेटियों का भी सार्वजनिक उल्लेख निरंतर किया जाना चाहिए, उन्हें सुर्खियों में छापा जाना चाहिए, वे हाशिए का चेहरा नहीं हैं, क्योंकि एक खिलाड़ी के तौर पर वे भी 'चैम्पियन' बनती हैं। आज मणिपुर के हालात पूरे देश के सामने हैं। रोशिबिना के मानस और मन में भी हिंसा और अशांति की अनगिनत छवियां अंकित रही होंगी, लेकिन वह वुशु खेल के फाइनल तक पहुंची। आप जब यह आलेख पढ़ रहे होंगे, तो एक और बेटी भारत के लिए कमोबेश रजत पदक जीत चुकी होगी! 2010 में संध्यारानी देवी की ऐसी सफलता के बाद रोशिबिना दूसरी महिला भारतीय खिलाड़ी हैं।

विश्व चैम्पियन मुक्केबाज निकहत xरीन भी अपने भार-वर्ग में ताकतवर मुक्के बरसाती हुई क्वार्टर फाइनल में पहुंच चुकी हैं। वह भी पदक की एक पुख्ता उम्मीद हैं। लड़कियों की हॉकी ने जिस तरह का खेल दिखाया है और सिंगापुर की टीम को 13-0 से कुचल दिया है, वे भी पदक की सशक्त उम्मीद हैं। सिफ्ट का निशानेबाजी के प्रति समर्पण देखा जा सकता है कि उन्होंने निशानेबाजी को पूरा वक्त देने के लिए 'डॉक्टरी' की पढ़ाई छोड़ दी है। अब वह 'बेचलर ऑफ फीजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स' की पढ़ाई गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर से कर रही हैं। यह फैसला उनका और माता-पिता का साझा फैसला है। बाद में सिफ्ट आईएएस बनना चाहती हैं, लेकिन फिलहाल वह निशानेबाजी को समर्पित हैं और कुछ विश्वस्तरीय जीत हासिल करना चाहती हैं। बहरहाल भारत में प्रतिभाओं का भंडार है, लेकिन सरकार सभी की पर्याप्त मदद करे और उन्हें पदक के मंच तक पहुंचाने में भूमिका अदा करे। शाबाश बेटियो! जिंदाबाद! भारत को अपना खेल ढांचा सुदृढ़ करने की जरूरत है। विकसित देशों की तुलना में भारत में खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं नहीं मिल पाती हैं। प्रायः प्रशिक्षण में कमी के चलते भारतीय खिलाड़ी विश्व स्तर पर कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण पिछड़ जाते हैं। अगर भारतीय खिलाड़ियों को वैश्विक स्तर की सुविधाएं मिल जाएं तो वे कड़ी चुनौती पेश कर सकते हैं और भारत का खेल प्रदर्शन भी सुधर जाएगा।

राय

हर आगंतुक, पर्यटक नहीं-4

हिमाचल में राजनीतिक कारीगिरी से पर्यटन क्षेत्र को देखा जाता रहा है और इससे सार्वजनिक संसाधनों का दुरुपयोग भी हुआ। इसमें दो राय नहीं कि एचपीटीडीसी के माध्यम से आरंभिक दौर में बनी होटल इकाइयों की भूमिका कारगर सिद्ध हुई, लेकिन धीरे-धीरे इस मद में आया धन व्यर्थ होता गया। आज भी पर्यटन निगम की कुछ इकाइयां अलाभकारी हैं, तो पर्यटन सूचना केंद्र ताले में बंद हैं। अधिकांश कैफेटेरिया बंद हो गए या सरकारों ने बेच दिए, फिर भी पर्यटन की परिकल्पना में हिमाचल ने दक्षता व विशिष्टता हासिल नहीं की। दो करोड़ पर्यटक इसलिए नहीं आ रहे कि हिमाचल ने मनोरंजन का ढांचा, इवेंट प्लानिंग और आने की वजह का विस्तार किया है, बल्कि प्रदेश की आबोहवा, साहसिक व युवा उत्साह तथा धार्मिक गतिविधियों के कारण निखार आ रहा है। बेशक निजी क्षेत्र में ऐसी अधोसंरचना का विस्तार हुआ है, जो पर्यटक के अनुभव और सुकून को बढ़ावा दे रहा है। दरअसल हिमाचल की पर्यटन योजनाओं ने राज्य को पर्यटन राज्य बनाने की समग्रता में देखा ही नहीं और न ही संभावनाओं के अक्स को समझा। यह दीगर है कि सुक्खू सरकार ने पर्यटन के आईने पर कांगड़ा को राजधानी का खिताब पहनाने का संकल्प लेते हुए कुछ परियोजनाओं पर गंभीर प्रयास शुरू किए हैं।

पर्यटन की अहमियत को फर्श से अर्श पर ले जाने के लिए, गगल एयरपोर्ट का प्रस्तावित विस्तार प्रदेश के लिए सबसे बड़ी सौगात साबित हो सकता है। इसी के साथ हेलिपोर्ट स्थापित करने की मंशा का वास्तविक आकार लेना, कल पर्यटन के नक्शे को मालामाल कर सकता है। आवश्यक यह भी है कि हिमाचल के सभी विभाग पर्यटन के नजरिए में अपनी योजनाओं-परियोजनाओं को मजबूती दें। इस दृष्टि से वन, खेल, पीडब्ल्यूडी, ऊर्जा, कला-संस्कृति, ग्रामीण व शहरी विकास, जल शक्ति तथा विज्ञान एवं तकनीक विभाग भी पर्यटन आकर्षण बढ़ा सकते हैं। प्रदेश के 68 विधानसभा हलकों में अगर एक-एक पर्यटन गांव स्थापित करने के लिए प्रयास किए जाएं, तो इन्हीं विभागों के बजट से कहीं हाईवे टूरिज्म, कहीं हाट बाजार, कहीं झील, कहीं घाट, कहीं साहसिक खेल, कहीं सांस्कृतिक केंद्र, कहीं उपहार केंद्र, कहीं फूड कोर्ट, तो कहीं ईको टूरिज्म या धार्मिक पर्यटन की सुविधाएं जुटाई जा सकती हैं। इसी के साथ एजुकेशन हब, साइंस सिटी, चाय नगरी, सेब राज्य, खेल नगरी तथा प्राकृतिक एवं बड़े बांधों पर केंद्रित पर्यटन के कई वार्षिक पैकेज इसे सदाबहार बना देंगे। पर्यटन सीजन को वार्षिक कैलेंडर के प्रारूप में सजाने के लिए खजियार, चंबा व सुजानपुर के चौगान, जंजैहली की प्राकृतिक छटा, धरोहर पर्यटन, मछली का शिकार, वर्ड वाचिंग, गोल्फ टूरिज्म, घृत मंडल पर्यटन, लोहड़ी व ट्राइबल उत्सव के साथ-साथ सांस्कृतिक समारोहों की शृंखला को एक व्यवस्थित सांचे में ढालते हुए इनका संचालन एक मेला प्राधिकरण के तहत करना होगा। हिमाचल प्रदेश में सिने पर्यटन की अपनी अहमियत है और एक व्यापक योजना व फिल्म एवं टीवी नीति के तहत अगर काम किया जाए, तो गरली-परागपुर के केंद्र में पहली फिल्म सिटी बनाई जा सकती है। हिमाचल ने ई-टैक्सी के जरिए स्वरोजगार को जोड़ा है और यह कदम पर्यटन व पर्यटकों के लिए सुविधाजनक हो सकता है। प्रमुख पर्यटक स्थलों के बस डिपो को पूर्ण रूप से इलेक्ट्रिक व टैक्सियों को स्वरोजगार के तहत पूर्ण इलेक्ट्रिक घोषित करके हिमाचल राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हलचल मचा सकता है। इसी के साथ एक विस्तृत पर्यटन स्वरोजगार नीति बनाई जाए, तो प्रदेश के हजारों बेरोजगारों को भविष्य का एक सुदृढ़ रास्ता मिल जाएगा। -क्रमशः

प्रशिक्षक को सही प्रबंधन दो

भूपिंदर सिंह

क्या हिमाचल सरकार पंजाब, गुजरात आदि राज्यों की तरह उत्कृष्ट खेल परिणाम दिलाने वाले बढ़िया प्रशिक्षकों को यहां लगातार कई वर्षों के लिए अनुबंधित कर प्रदेश के खिलाड़ियों को राज्य में ही प्रशिक्षण सुविधा दिला कर पलायन रोक नहीं सकती है? इससे प्रदेश में खेल वातावरण बनेगा तो हर खेल प्रशिक्षक चाहेगा कि उसके शिष्य उत्कृष्ट प्रदर्शन करें'

आज का अभिभावक खेलों में भी अपने बच्चों का कैरियर देख रहा है, क्योंकि खेल आज अपने आप में एक प्रोफेशन है। मानव द्वारा विज्ञान में बहुत प्रगति कर प्रौद्योगिकी व चिकित्सा के क्षेत्र में नए-नए सफल शोध कर जीवनशैली को काफी आसान व सुविधाजनक बना लिया है, मगर शिक्षण व प्रशिक्षण में शिक्षक व प्रशिक्षक की भूमिका का महत्व आज भी वही है जैसा हजारों साल पहले था। महाभारत में कृष्ण सारथी नहीं होते तो क्या अर्जुन भीष्म, कर्ण व अन्य अजेय महारथियों को हरा पाते। विश्व स्तर पर किसी खेल विशेष में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए क्षमतावान प्रशिक्षक का होना बेहद जरूरी होता है। हमारे यहां खेल प्रशिक्षण के लिए वह वातावरण ही नहीं बन पाया है, जिसमें प्रशिक्षक खिलाड़ी से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट परिणाम दिला सके। खेल प्रशिक्षण दस साल से भी अधिक समय तक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। इतनी समय अवधि खेल प्रशिक्षण को देकर ही खिलाड़ी अपने प्रदेश व देश को गौरव दिला पाता है। हिमाचल प्रदेश में लगातार प्रशिक्षण कार्यक्रम का कोई भी प्रावधान अभी तक नहीं बन पाया है।

हिमाचल प्रदेश राज्य युवा सेवाएं एवं खेल विभाग के प्रशिक्षकों को कभी विभिन्न विभागों की भर्तियों में ड्यूटी तो कभी मेलों व उत्सवों में हाजिरी भरनी पड़ती है। खेल प्रशिक्षक की नियुक्ति ही उच्च खेल परिणामों के लिए की गई होती है, मगर यहां पर प्रशिक्षकों को केवल मल्टीपर्पज कर्मचारी बना दिया गया है। हिमाचल प्रदेश के अधिकतर प्रशिक्षकों का कार्य उच्च खेल प्रशिक्षण से हट कर अपनी फिटनेस तथा सेना में भर्ती कराने तक सीमित हो गया है। हिमाचल प्रदेश के मेलों व उत्सवों में किसी और खेल का प्रशिक्षक किसी और ही खेल की प्ले फील्ड में नजर आता है। इसी तरह पुलिस आदि विभागों की भर्तियों में एथलेटिक्स प्रशिक्षकों की ड्यूटी तो समझ आती है, मगर वहां तो हर खेल के प्रशिक्षक को भेज दिया जाता है। नियमानुसार इन भर्तियों के लिए एथलेटिक्स प्रशिक्षक ही सक्षम है, क्योंकि इस टैस्ट में केवल एथलेटिक स्पर्धाओं को ही रखा गया है। ऐसे में एथलेटिक्स प्रशिक्षक की ड्यूटी तो समझ आती है, मगर वहां अन्य खेलों, जैसे कुश्ती, मुक्केबाजी, हैंडबाल व वॉलीबाल आदि के प्रशिक्षक का क्या औचित्य है, इस बात का उत्तर किसी के भी पास नहीं है।

विभिन्न सरकारों ने खेल ढांचे में काफी तरक्की भी की है, मगर क्षमतावान प्रशिक्षकों की नियुक्ति के बारे में हिमाचल में अभी तक कुछ भी नहीं हो पाया है। स्तरीय प्रशिक्षकों के बिना उत्कृष्ट प्रदर्शन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जो प्रशिक्षक खेल प्रशिक्षण से दूर रह कर मौज-मस्ती कर रहा है, वह तो खुश रहता होगा, मगर जो सच ही में प्रशिक्षण करवा रहा होगा, वह जब कई दिनों तक खेल मैदान से दूर रहेगा तो फिर कौन अभिभावक अपने बच्चे को बिना प्रशिक्षक के मैदान में भेजेगा। हद तो तब हो जाती है जब राज्य में चल रहे खेल छात्रावासों में नियुक्त प्रशिक्षकों की ड्यूटी भर्तियों में लगा दी जाती है और खेल छात्रावास में रह रहे खिलाडियों को भी खेल प्रशिक्षण से दूर कर दिया जाता रहा है।

क्या प्रतिभा खोज से चयनित इन अति प्रतिभाशाली खिलाडियों को प्रशिक्षक से कुछ समय के लिए ही सही, इस तरह प्रशिक्षण कार्यक्रम से दूर करना कहां तक उचित है? खेल छात्रावासों में नियुक्त प्रशिक्षकों की ड्यूटी खेल प्रशिक्षण के सिवा और कहीं भी नहीं होनी चाहिए। आजकल हर शिक्षित मां-बाप के दो और कई जगह तो एक ही बच्चा है, ऐसे में वह उसे उस क्षेत्र में उच्चतम शिखर तक ले जाना चाहता है जिसमें बच्चे की रुचि व उस क्षेत्र के लिए पर्याप्त प्रतिभा भी हो। आज का अभिभावक अपने बच्चों के कैरियर की खातिर ही सरकार की मुफ्त शिक्षा सुविधाओं को छोडक़र निजी क्षेत्र की महंगी, मगर अधिक गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए लाखों रुपए खर्च कर रहा है। आज लाखों प्रतिभाशाली विद्यार्थी निजी कोचिंग संस्थानों में डाक्टर व इंजीनियर बनने इसलिए जमा दो की परीक्षा से कई वर्ष पहले पहुंच रहे हैं। इसी तरह अब खेल क्षेत्र में भी हो रहा है। अभिभावक अपने बच्चों के लिए खेलों में भी कैरियर तलाश रहा है और इस सबके लिए अच्छी खेल सुविधाओं के साथ-साथ उच्च स्तरीय प्रशिक्षक भी लगातार कई वर्षों तक उसके बच्चों को मिलना चाहिए ताकि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता बनने का सफर सफलतापूर्वक पूरा कर सके। इसलिए देश में निजी खेल अकादमियों का चलन भी बढ़ रहा है। गोपीचंद बैडमिंटन अकादमी के विश्व स्तर के परिणाम सबके सामने हैं।

यह सब लगातार अच्छे प्रशिक्षण कार्यक्रम का ही नतीजा है। इस समय विभिन्न खेलों के लिए देश में निजी स्तर पर कई आकादमियां शुरू हो चुकी हैं। इन खेल अकादमियों को अधिकतर पूर्व ओलंपियन चला रहे हैं और यहां से अच्छे खेल परिणाम भी मिल रहे हैं। इन अकादमियों में जो विशेष है, वह यह है कि यहां उच्च क्षमता वाला प्रशिक्षक लगातार उपलब्ध है। हिमाचल प्रदेश के पास आज विभिन्न खेलों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्ले फील्ड तैयार हैं, वहां पर या तो प्रशिक्षक हैं ही नहीं और जहां हैं भी, वे या तो प्रशिक्षण से बेरुख हैं या उनमें अच्छे स्तर के खेल परिणाम दिलाने की क्षमता ही नहीं है। क्या हिमाचल सरकार पंजाब, गुजरात आदि राज्यों की तरह उत्कृष्ट खेल परिणाम दिलाने वाले बढिया प्रशिक्षकों को यहां लगातार कई वर्षों के लिए अनुबंधित कर प्रदेश के खिलाडियों को राज्य में ही प्रशिक्षण सुविधा दिला कर खेल प्रतिभा का पलायन रोक नहीं सकती है? इससे प्रदेश में खेल वातावरण बनेगा तो हर खेल प्रशिक्षक प्रेरित होकर चाहेगा कि उसके शिष्य भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करें। इस सबके लिए खेल विभाग व जहां प्रशिक्षक प्रशिक्षण करवा रहा है, वहां उसे सही प्रबंधन देकर प्रशिक्षण कार्यक्रम से जोडऩा होगा। तभी पहाड़ की संतानों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के सही मौके मिलेंगे।

हास्य चिंतन

मेहमान आ रहे हैं!

मैंने अपने एक मित्र को फोन किया-'क्यों भाई क्या कर रहे हो?' मित्र ने बहुत अनमने मन से उत्तर दिया-'अरे यार, रेलवे स्टेशन जा रहा हूं, मेहमान आ रहे हैं।' मैंने हंसकर कहा-'क्यों मजाक कर रहे हैं, यह नई सदी में मेहमानों का क्या लफड़ा है? अब कौन मेहमान बनना पसंद करता है और मेजबान भी नहीं रहे।' मित्र ने जवाब दिया-'मजाक नहीं कर रहा, आज वाकई मेहमान आ रहे हैं और वह भी तीन दिनों के लिए।' मैंने उससे पूछा-'अब क्या करोगे तुम?' मित्र एक पल चुप्पी साध गए और फिर बोले-'अब जो भी होगा, हो जाएगा। मेहमान भी बहुत नजदीक के हैं। टाला भी नहीं जा सकता।' 'लेकिन यार, यह तीन दिनों का टाइम कैसे निकाल लाए। अब तो मेहमान एक टाइम का होता है। यह तीन दिन तक उनकी सेवा में लगे रहना तो बड़ा मुश्किल है। यह तो बताओ उनकी संख्या कितनी है।' मैंने पूछा तो वे बोले-'पूरे परिवार सहित चारों सदस्य आ रहे हैं।' मैंने कहा-'ठंड का वक्त है। रजाइयां तो है न घर में स्पेयर?' मित्र बोले-'नहीं हैं यार, लेकिन टैंट हाऊस से ले आया हूं।' 'और राशन-पानी?' मैंने पूछा। वे बोले-'वह तो चिंता की बात नहीं है। सैलरी परसों ही मिली है। पत्नी ने नाश्ते, लंच और डिनर का तीनों दिन का मैनू बना लिया है।' मैंने कहा-'भैया ध्यान रखना, अपने शहर में पर्यटन स्थल कई हैं। कहीं वे अपना प्रोग्राम न बदल दें। मेरा मतलब ठहरने की अवधि पांच दिनों में न बदल जाए।' मित्र ने बताया-'नहीं-नहीं, वह मैं दो दिनों में ही सलटा दूंगा ताकि तीसरे दिन तो वे खिसक ही लें। अच्छा, मैं बाद में बात करूंगा। गाड़ी का टाइम हो गया है, अभी थ्री व्हीलर लेकर निकलता हूं।' मैंने कहा-'आमीन, भगवान तुम्हारा हौसला बनाए रखे।'

यह कहकर फोन काट दिया। फोन तो काट दिया, लेकिन मैं डर गया। मैंने पत्नी से कहा-'जल्दी एक कप चाय बनाओ। थोड़ा मन डिप्रेस सा हो गया है।' पलक झपकते पत्नी चाय बनाकर ले आई। मैंने कहा-'बैठो, सुनो वर्मा जी के मेहमान आ रहे हैं।' मेरी बात पर वह हंसी और बोली-'आने दो न। उनके तो आने भी चाहिए, बड़े इतराते फिरते हैं। अब पता चलेगा कि तीन दिन तक कैसे पराये आदमी को भुगतना पड़ता है। लेकिन आप डिप्रेस क्यों हो रहे हैं। यह तो खुशी की बात है कि मेहमान वर्मा जी के आ रहे हैं। हमारे तो आने से रहे।' मैंने कहा-'वह तुम्हारे भाई-भाभी तो कह रहे थे अगले मंथ बैंगलौर से आने की।' पत्नी के चेहरे की रंगत एक पल को बदली और वह बोली-'आरे वह तो घर के आदमी हैं। आ जाएं तो क्या फर्क पड़ता है और फिर वे अगले मंथ आएंगे। छोड़ो व्यर्थ की चिंता। चाय ठंडी हो रही है।' 'चाय क्या, मैं तो अभी से ठंडा हो रहा हूं। वर्मा जी ने बिस्तर टैंट हाऊस से मंगवाए हैं, अपने कैसे क्या रहेगा, क्योंकि सर्दी तो अगले मंथ में भी रहेगी और उन्हें सुलाना कहां है? मेरा मतलब अपने पास किराये के कुल दो कमरे हैं। मेहमानों को सुलाना तो पड़ेगा न।' मैंने कहा। पत्नी बोली-'आप, मैं और बच्चे एक जगह सो जायेंगे, उन्हें अपना वाला बैडरूम दे देंगे। आप क्यों फिक्र करते हैं।

मैं सब मैनेज कर लूंगी।' मैंने कहा-'लेकिन भागवान वे बीस को आएंगे। बीस तक तो सैलरी तार-तार हो जाती है। मैं पी. एफ. से लोन एप्लाई कर देता हूं।' इस बार पत्नी के कान चौकन्ने हुए, बोली-'यह आपकी व्यवस्था है, जो भी करना हो, कर लो। पैसा तो खर्च होगा ही।' 'लेकिन तुम एक बार कन्फर्म तो कर लो, कहीं उन्होंने प्रोग्राम कैंसिल कर दिया हो तो, अपन क्यों परेशान हों।' पत्नी ने झट से फोन लगाया-फोन उसकी भाभी ने उठाया था। बातचीत में उसने सारी जानकारी कर ली और फोन का चोगा रखकर मुझसे बोली-'सुनो, मेहमान आ ही रहे हैं।' मैंने लिहाफ तान लिया और गुस्से से तिलमिलाता रहा। पत्नी उठकर चली गई थी।

पूरन सरमा

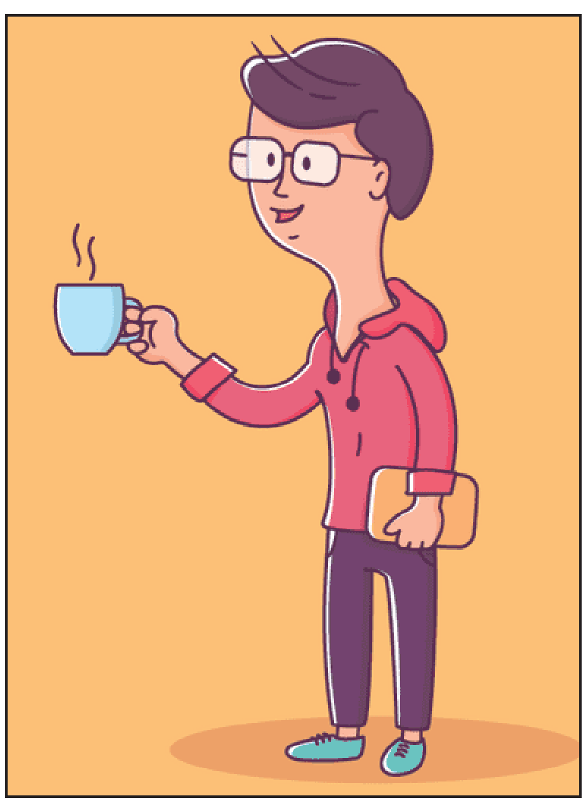

विदेशी भुगतान पर ठोस प्रभाव डालने के लिए अधिक अधिकारों के लिए भारत कर रहा है बात: आरबीआई डिप्टी गवर्नर

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के डिप्टी गवर्नर टी रबी शंकर ने आज कहा कि उपलब्ध प्रौद्योगिकी के बावजूद उच्च रेमिटेंस लागत देशों के लिए अनुचित है क्योंकि ऐसे अधिक क्षेत्राधिकार हैं जो विदेशी भुगतान को प्रभावित कर सकते हैं। आरबीआई के डिप्टी गवर्नर ने कहा कि भारत रेमिटेंस की उच्च लागत के मुद्दे को हल करने का प्रयास कर रहा है।

नई दिल्ली: भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के डिप्टी गवर्नर टी रबी शंकर (T Rabi Sankar) ने आज कहा कि उपलब्ध तकनीक के बावजूद देशों के लिए रेमिटेंस की उच्च लागत 'अनुचित' है, और विदेशी भुगतान पर प्रभाव डालने के लिए ज्यादा अधिकार क्षेत्र के साथ बातचीत कर रहा है।

टी शंकर ने कहा कि विश्व बैंक के विश्वव्यापी रेमिटेंस मूल्यों के डेटाबेस के अनुसार, 2022 की चौथी तिमाही में रेमिटेंस के खुदरा आकार (खुदरा आकार - 200 अमेरिकी डॉलर) की वैश्विक औसत लागत 6.2 प्रतिशत थी। कुछ देशों के लिए, यह लागत 8 प्रतिशत तक हो सकती है।

रेमिटेंस की उच्च लागत की चुनौती से निपटने का प्रयास जारी

आरबीआई के डिप्टी गवर्नर ने कहा कि भारत रेमिटेंस की उच्च लागत की चुनौती से निपटने के लिए प्रयास कर रहा है, और अभी हाल ही में शुरू की गई केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (सीबीडीसी) इस मामले में एक संभावित समाधान दे सकता है।

टी शंकर ने कहा कि

यदि हम विभिन्न देशों में सीबीडीसी प्रणालियों को जोड़ने के लिए एक तकनीकी रूप से व्यवहार्य समाधान लेकर आते हैं, तो यह विरासती संवाददाता बैंकिंग प्रणाली को पूरी तरह से दरकिनार करके सीमा पार भुगतान की लागत को कम कर सकता है।

भारत और सिंगापुर ने शुरू किया UPI-PayNow

आपको बता दें कि इस साल फरवरी में, भारत और सिंगापुर ने UPI-PayNow लिंकेज को शुरू किया था जिससे दोनों देशों के यूजर्स अपने मोबाइल ऐप के जरिए आसानी, जल्दी, और सुरक्षित तरह से पैसे भेज सके।

टी शंकर ने जोखिमों के बारे में भी की बात

आरबीआई के डिप्टी गवर्नर ने उन जोखिमों के बारे में भी बात की जो निजी डिजिटल मुद्राएं भारत और अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं जैसे देशों के लिए पैदा करती हैं। उन्होंने कहा, ऐसी मुद्राएं उभरते बाजार वाले देशों की अपने बाहरी क्षेत्र का प्रबंधन करने या नीतिगत स्वतंत्रता बनाए रखने में बाधा डालती है।

आर्थिक मामलों के विभाग के सचिव, अजय सेठ ने बुनियादी ढांचा क्षेत्र में अधिक निजी निवेश और शहरों के ₹रचनात्मक पुनर्विकास₹ का आह्वान किया।

अजय सेठ ने कहा कि

यह विशेष रूप से एक ऐसा क्षेत्र है, जो बहुत कम निजी पूंजी को आकर्षित कर रहा है। फिलहाल, बुनियादी ढांचे में निवेश का लगभग 5 प्रतिशत ही निजी पूंजी से आ रहा है। और, यह इस अर्थ में टिकाऊ नहीं है कि सरकारों की क्षमताएं सीमित हैं, और इस प्रकार, हमें निजी क्षेत्र के आने के लिए अवसर पैदा करने होंगे।

इनसाइड

गोल्ड लुढ़का तो चांदी हो गई महंगी, जानें आपके शहर में क्या है सोने-चांदी का भाव

शुक्रवार को सोने की कीमतों में गिरावट देखी गई। वहीं आज चांदी की कीमत में तेजी आई है। ऐसे में अगर आप सोना खरीदने की प्लानिंग कर रहे हैं तो आपके लिए यह खबर जरूरी है। इंटरनेशनल मार्केट में एक औंस सोने का कारोबार 1926 डॉलर में हुआ। वहीं चांदी 23.19 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रही थी। जानिए आपके शहर में क्या है 10 ग्राम सोने की कीमत।

नईदिल्ली। सर्राफा बाजार में आज यानी शुक्रवार को सोने की कीमतों में गिरावट आई है। अगर आप भी सोने या चांदी खरीदने का प्लान बना रहे हैं तो आपको एक बार जरूर चेक करना चाहिए कि आज आपके शहर में गोल्ड और सिल्वर की कीमत क्या है?

सस्ता हुआ सोना

एचडीएफसी सिक्योरिटीज के अनुसार शुक्रवार को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में सोना 170 रुपये गिरकर 60,000 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। वहीं, गुरुवार को गोल्ड 60,170 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुई थी। आज वैश्विक बाजारों में सोना गिरावट के साथ 1,925 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर था। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ कमोडिटी विश्लेषक सौमिल गांधी ने कहा कि घरेलू बाजारों में सोने की कीमत दबाव में आ गई, जिससे रुपये में मजबूती आई। मजबूत अमेरिकी मैक्रो डेटा के कारण कॉमेक्स सोने में गिरावट आई, जिससे यह उम्मीद जगी कि फेडरल रिजर्व ब्याज दरों पर लंबे समय के लिए उच्च रुख अपनाएगा।

क्या है चांदी का भाव

आज चांदी की कीमतों में तेजी देखने को मिला है। आज चांदी 800 रुपये उछलकर 75,300 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई। जबकि चांदी बढ़त के साथ 23.70 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रही थी।

आपके शहर में क्या है सोने की कीमत?

गुड रिटर्न की वेबसाइट के मुताबिक आज 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत इस प्रकार हैं:

दिल्ली में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 59,940 रुपये है।

नोएडा में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 59,940 रुपये है।

मुंबई में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 59,840 रुपये है।

चैन्नई में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 60,110 रुपये है।

कोलकाता में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 59,840 रुपये है।

बेंगलुरु में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 59,840 रुपये है।

केरल में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 59,840 रुपये है।

पटना में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 59,890 रुपये है।

सूरत में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 59,890 रुपये है।

चंडीगढ़ में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 59,940 रुपये है।

2030 तक औसतन 6.5 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी विकास दर: सीईए

मुख्य आर्थिक सलाहकार (सीईए) अनंत नागस्वरन ने आज कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था 2023 से 2030 तक औसतन 6.5 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ेगी। नागज्वरन ने बीसीसीआई इंडो–पैसिफिक इकोनॉमिक कॉन्फ्रेंस में कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था अनिश्चितता के दौर में है और भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में शामिल होना चाहिए और चीन प्लस वन रणनीति के लिए एक आकर्षक देश बनना चाहिए।

नई दिल्ली: मुख्य आर्थिक सलाहकार (सीईए) वी अनंत नागेश्वरन ने शुक्रवार को कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था 2023 से 2030 के बीच सालाना औसतन 6.5 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी।

वैश्विक अर्थव्यवस्था अनिश्चितता के दौर से गुजर रही है

बीसीसीआइ इंडो पैसिफिक इकोनमिक कान्क्लेव में बोलते हुए नागेश्वरन ने कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था अनिश्चितता के दौर से गुजर रही है और भारत को वैश्विक सप्लाई चेन में शामिल होना होगा और खुद को चीन प्लस वन रणनीति के लिए आकर्षक बनाना होगा।

उन्होंने कहा कि वित्त वर्ष 2021-22 में हमारी आर्थिक विकास दर 9.1 प्रतिशत, वित्त वर्ष 2022-23 में यह 7.2 प्रतिशत रही। इस वर्ष और दशक के शेष सालों के लिए औसतन 6.5 प्रतिशत विकास दर रहने की संभावना है। मैं 6.5 प्रतिशत विकास दर की बात कर रहा हूं। 7.5 या आठ प्रतिशत की नहीं है। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि इस दौरान वैश्विक वृद्धि में उस तरह की तेजी देखने को मिलने की संभावना कम है, जैसा कि 2003 से 2008 के बीच थी। उन्होंने कहा कि भारत ने पिछले आठ वर्षों में अभूतपूर्व प्रगति की है। 2014 में हमारी अर्थव्यवस्था 10वें नंबर थी जो अब पांचवें नंबर है। इस दशक के अंत तक हम दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएंगे।

एसबीआई की इस स्कीम में निवेश का आखिरी मौका! 30 सितंबर है लास्ट डेट, मिलते हैं ये बेनिफिट्स

नियमित सावधि जमा (एफडी) के अलावा एसबीआई कुछ विशेष एफडी की भी पेशकश करता है। इन्हीं खास एफडी में से एक है वरिष्ठ नागरिकों के लिए एसबीआई वी केयर स्कीम। यह योजना 60 साल के उपर वाले सीनियर सिटीजन को 5 साल से 10 साल के बीच की अवधि पर उच्च ब्याज दर प्रदान करती है। पढ़िए क्या है निवेश करने की आखिरी तिथि।

नई दिल्ली। देश का सबसे बड़ा सरकारी बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) के पास रेगुलर फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) के अलावा कुछ स्पेशल एफडी की भी पेशकश करता है। इन्हीं स्पेशल एफडी में से एक SBI We Care स्कीम है जो सीनियर सिटीजन को टारगेट करता है।

क्या है इस एफडी में स्पेशल?

यह योजना 60 साल के उपर वाले सीनियर सिटीजन को 5 साल से 10 साल के बीच की अवधि पर उच्च ब्याज दर प्रदान करती है।

एसबीआई ने एफडी पर उच्च ब्याज की पेशकश करके वरिष्ठ नागरिकों की आय को सुरक्षित करने के लिए 2022 में ₹एसबीआई वेकेयर₹ विशेष एफडी योजना की शुरुआत की थी।

आज हम इस एफडी के बारे में इसलिए बात कर रहे हैं क्योंकि इस एफडी में निवेश करने की आखिरी तिथि नजदीक आ रही है।

कब है निवेश करने की आखिरी तिथि?

इस एफडी में निवेश करने की आखिरी तिथि 30 सितंबर 2023 है। यह योजना नई जमा और परिपक्व जमा के नवीनीकरण के लिए उपलब्ध है। इस योजना में केवल वरिष्ठ नागरिक ही निवेश कर सकते हैं।

कितना है ब्याज दर?

इस योजना के तहत, वरिष्ठ नागरिक अन्य अवधियों पर उन्हें दिए जाने वाले 50 बीपीएस प्रीमियम के अलावा 50 बीपीएस अतिरिक्त ब्याज दर का लाभ उठा सकते हैं।

इस प्रकार, एसबीआई वेकेयर को चुनने वाले वरिष्ठ नागरिक अन्य जमाकर्ताओं को दी जाने वाली एसबीआई एफडी ब्याज दर की तुलना में 100 बीपीएस अधिक ब्याज दर अर्जित करते हैं। इस एफडी पर एसबीआई 7.50 प्रतिशत का ब्याज देता है।

क्या हैं इस एफडी के बेनिफिट्स?

मासिक या त्रैमासिक अंतराल पर एफडी पर ब्याज भुगतान का लाभ उठा सकते हैं।

नेट बैंकिंग, योनो ऐप और शाखा के माध्यम से इसका लाभ उठाया जा सकता है इस एफडी पर आप लोन की भी सुविधा ले सकते हैं।

ये भी पढ़ें: SBI के ग्राहकों के लिए बैंक ने शुरू की नई सर्विस, अब YONO ऐप के जरिए कर सकेंगे ये काम

कैसे करें निवेश?

इस स्कीम में निवेश करने के लिए आप बैंक के ब्रांच या इंटरनेट बैंकिंग या योनो ऐप के माध्यम से कर सकते हैं। यह योजना नई जमा और परिपक्व जमा के नवीनीकरण पर उपलब्ध है।

कमजोर मानसून और कच्चे तेल की कीमतों का नहीं पड़ेगा जीडीपी पर असर, विकास दर 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान

कच्चे तेल की कीमतों के बढ़ जाना एक चिंता का विषय बन गया है। वित्त मंत्रालय ने कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों को लेकर कहा कि यह अभी बर्दाश्त से बाहर नहीं है। वहीं शेयर बाजार में जारी गिरावट और भू–राजनैतिक वजहों से दूसरी छमाही में निवेश पर असर देखने को मिल सकता है। वित्त मंत्रालय का मानना है कि कमजोर मानसून के बावजूद जीडीपी 6.5 फीसदी रह सकता है।

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय का मानना है कि कमजोर मानसून और कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के बावजूद चालू वित्त वर्ष यानी 2023-24 की विकास दर प्रभावित नहीं होगी और अर्थव्यवस्था की विकास दर 6.5 प्रतिशत रहेगी।

चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में विकास दर 7.8 प्रतिशत थी। शुक्रवार को जारी वित्त मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक आर्थिक गतिविधियों की रफ्तार में कमी नहीं आई है और दूसरी तिमाही (जुलाई-सितंबर) में अर्थव्यवस्था सही आकार ले रही है।

जुलाई की खुदरा महंगाई दर सात प्रतिशत से ऊपर चली गई थी जो अब नीचे आ रही है और सप्लाई चेन के दुरुस्त होने से खुदरा महंगाई दर और कम होगी। मंत्रालय का कहना है कि अगस्त में बारिश में कमी से खरीफ और रबी दोनों फसल प्रभावित होने की आशंका पैदा हो गई है, लेकिन सितंबर में हुई अच्छी बारिश से इस आशंका में कमी आ सकती है। हालांकि अभी इसका मूल्यांकन किया जाना बाकी है।

कच्चे तेल की बढ़ती कीमत

कच्चे तेल की बढ़ती कीमत चिंता का विषय तो है लेकिन यह कीमत अभी बर्दाश्त से बाहर की स्थिति में नहीं है। कच्चे तेल की कीमत 95 डालर प्रति बैरल तक चली गई थी जो गिरकर 92 डालर प्रति बैरल के पास आ गई है।

मंत्रालय का मानना है कि स्टाक मार्केट में गिरावट और भू-राजनैतिक वजहों से वित्त वर्ष की दूसरी छमाही में निवेश के माहौल पर विपरीत असर दिख सकता है, लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका कोई गहरा प्रभाव नहीं होगा। वित्त मंत्रालय के मुताबिक एडवांस कारपोरेट टैक्स में बढ़ोतरी को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि निजी सेक्टर की वित्तीय सेहत अच्छी है।

गेहूं की कीमतों को कम करने के लिए सरकार ने शुरू किया ई-नीलामी, 21 सितंबर तक बेचा 18.09 लाख टन गेहूं

गेहूं की कीमतों के बढ़ जाने के बाद देश के सभी नागरिक काफी चिंतित है। गेहूं की कीमतों को कम करने के लिए सरकार ई–नीलामी के जरिये गेहूं बेच रही थी। यह नीलामी ओएमएसएस के तहत हुई है। इस ई–नीलामी में केंद्र सरकार 18.09 लाख टन गेहूं बेचा है। गेहूं के साथ चावल की भी ई–नीलामी की गई है। यह नीलामी 21 सितंबर 2023 तक आयोजित की गई थी।

नई दिल्ली। सरकार ने शुक्रवार को कहा कि उसने खुले बाजार बिक्री योजना (OMSS) के तहत 13 ई-नीलामी में थोक उपयोगकर्ताओं को 18.09 लाख टन गेहूं बेचा है। यह ई-नीलामी के जरिये गेहूं बेचने से आटे की कीमतों को कम करने में मदद मिली है।

पिछले महीने 9 अगस्त को सरकार ने घोषणा की थी कि वह थोक उपयोगकर्ताओं को ओएमएसएस के तहत अतिरिक्त 50 लाख टन गेहूं और 25 लाख टन चावल बेचेगी। यह बिक्री ई-नीलामी के जरिये हुई है। यह ई-नीलामी साप्ताहिक होती थी। इसमें गेहूं 2,125 रुपये प्रति क्विंटल के आरक्षित मूल्य पर बेचा जा रहा है। यह मौजूदा न्यूनतम समर्थन मूल्य के बराबर है।

खाद्य मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि ओएमएसएस नीति के सफल कार्यान्वयन ने यह सुनिश्चित किया है कि खुले बाजार में गेहूं की कीमत नियंत्रण में रहें। वित्त वर्ष 2023-24 की शेष अवधि के लिए ओएमएसएस नीति को जारी रखने के लिए केंद्रीय पूल में गेहूं का पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध है।

ई–नीलामी में 18.09 लाख टन गेहूं बेचा

खाद्य मंत्रालय ने बताया कि 21 सितंबर 2023 तक कुल 13 ई-नीलामी आयोजित की गई हैं। इसमें 18.09 लाख टन गेहूं बेचा गया है। वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान देश भर में 480 से अधिक डिपो बनाए गए है। इसमें हर सप्ताह नीलामी में 2 लाख टन गेहूं की पेशकश की जा रही है। मंत्रालय ने कहा कि ई-नीलामी में गेहूं का भारित औसत बिक्री मूल्य अगस्त में 2,254.71 रुपये प्रति क्विंटल था, जो 20 सितंबर को घटकर 2,163.47 रुपये प्रति क्विंटल हो गया है।

खाद्य मंत्रालय ने अपने बयान में कहा है कि गेहूं के भारित औसत बिक्री मूल्य में गिरावट का रुख बताता है कि खुले बाजार में गेहूं की बाजार कीमत ठंडी हो गई हैं। इसके अलावा आयोजित प्रत्येक साप्ताहिक ई-नीलामी में, बेची गई मात्रा प्रस्तावित मात्रा के 90 फीसदी से अधिक नहीं हुई है, जो दर्शाता है कि देश भर में गेहूं के पर्याप्त स्टॉक की पेशकश की जा रही है।

2024 में एक देश एक चुनाव संभव नहीं

लॉ कमिशन पॉक्सो एक्ट -ई-एफआईआर पर सहमति

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

राष्ट्रीय विधिक आयोग (लॉ कमिशन आफ इंडिया) ने बुधवार को अपने सदस्यों के साथ 'एक देश एक चुनाव' समेत तीन मुद्दों पर विचार करने के लिए बैठक बुलाई थी। इनमें से एक राष्ट्र एक चुनाव मामले में कुछ पेच फंसा है, लेकिन बाकी अन्य दो मामलों पॉक्मेंसो एक्ट और ई-एफआईआर पर सहमति बन गई है। वहीं एक साथ चुनावों पर विधि आयोग की रिपोर्ट 2024 के चुनावों से पहले सामने आने की उम्मीद है। वैसे लॉ कमिशन भारत में एक राष्ट्र एक चुनाव की वास्तविकता बनाने के लिए संविधान में संशोधन का सुझाव देगा। कमीशन का कहना है कि 2024 चुनाव से पहले एक देश एक चुनाव लाना मुश्किल होगा। हो सकता है कि यह व्यवस्था 2029 में अपनाई जा सकती है ।लिहाजा लोकसभा और विधानसभाओं के एक साथ चुनाव नहीं होंगें। लॉ कमिशन ने कहा है कि लगता है कि कुछ और बैठकें करनी होंगी। लेकिन इस मुद्दे पर कोई ठोस नतीजे पर नहीं पहुंचे। वहीं अध्यक्ष जस्टिस ऋतु राज ने कहा कि पॉक्सो एक्ट में संशोधन कर सहमति से भी संबंध बनाने की उम्र 18 साल से घटाकर 16 साल करने और ई-एफआईआर दर्ज करने की सुविधा को लेकर रिपोर्ट को अंतिम और ठोस स्वरूप दिया गया।

क्रांतिकारी भगत सिंह जी

मां भारती के अमर शहीदों में सरदार भगत सिंह का नाम सबसे प्रमुख रूप से लिया जाता है। भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर, 1907 को पंजाब के जिला लायलपुर में बंगा गांव (जो अभी पाकिस्तान में है) के एक देशभक्त सिख परिवार में हुआ था, जिसका अनुकूल प्रभाव उन पर पड़ा था।

परिवार :- उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। यह एक सिख परिवार था जिसने आर्य समाज के विचार को अपना लिया था। उनके परिवार पर आर्य समाज व महर्षि दयानंद की विचारधारा का गहरा प्रभाव था। भगत सिंह के जन्म के समय उनके पिता 'सरदार किशन सिंह' एवं उनके दो चाचा 'अजीत सिंह' तथा 'स्वर्ण सिंह' अंग्रेजों के खिलाफ होने के कारण जेल में बंद थे।

जिस दिन भगत सिंह पैदा हुए उनके पिता एवं चाचा को जेल से रिहा हुए थे। इस शुभ घड़ी के अवसर पर भगत सिंह के घर में खुशी और भी बढ़ गई थी। भगत सिंह के जन्म के बाद उनकी दादी ने उनका नाम 'भागो वाला' रखा था। जिसका मतलब होता है 'अच्छे भाग्य वाला'। बाद में उन्हें 'भगत सिंह' कहा जाने लगा...।

शिक्षा : वह 14 वर्ष की आयु से ही पंजाब की क्रांतिकारी संस्थाओं में कार्य करने लगे थे। डी.ए.वी. स्कूल से उन्होंने नौवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1923 में इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करने के बाद उन्हें विवाह बंधन में बांधने की तैयारियां होने लगी तो वह लाहौर से भागकर कानपुर आ गए। फिर देश की आजादी के संघर्ष में ऐसे रमें कि पूरा जीवन ही देश को समर्पित कर दिया...।

क्रांतिकारी कदम : भगत सिंह ने देश की आजादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया, वह युवकों के लिए हमेशा ही एक बहुत बड़ा आदर्श बना रहेगा। भगत सिंह को हिन्दी, उर्दू, पंजाबी तथा अंग्रेजी के अलावा बांग्ला भी आती थी जो उन्होंने बटुकेश्वर दत्त से सीखी थी। जेल के दिनों में उनके लिखे खतों व लेखों से उनके विचारों का अंदाजा लगता हैं कि मां भारती की आजादी के लिए किसी हद तक भी जाने को तैयार थे, और ऐसा ही उन्होंने किया मां भारती की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया..।

उनका विश्वास था कि उनकी शहादत से भारतीय जनता और उग्र हो जाएगी, लेकिन जब तक वह जिंदा रहेंगे ऐसा नहीं हो पाएगा। इसी कारण उन्होंने मौत की सजा सुनाने के बाद भी माफीनामा लिखने से साफ मना कर दिया था...।

महात्मा गांधी के विचारों के विपरीत-:

महात्मा गांधी देश की आजादी अहिंसा से प्राप्त करना चाहते थे।

लेकिन भगत सिंह जानते थे कि अंग्रेज कभी भी शांति व अहिंसा से भारत देश को आजाद करने वाले नहीं है। इसलिए भगत सिंह क्रांतिकारी तरीके से संघर्ष व प्रचंड पुरुषार्थ के बल पर आजादी हासिल करना चाहते थे। इसलिए उनके विचार गांधी के विचारों से मेल नहीं खाते थे।

नौजवान भारत सभा की स्थापना-:

अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह की सोच पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आजादी के लिए नौजवान भारत सभा की स्थापना की.,

काकोरी कांड में रामप्रसाद 'बिस्मिल' सहित 4 क्रांतिकारियों को फांसी व 16 अन्य को कारावास की सजा से भगत सिंह इतने ज्यादा बेचैन हुए कि चंद्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़ गए और उसे एक नया नाम दिया 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन'। इस संगठन का उद्देश्य सेवा, त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक तैयार करना था.,

इसके बाद भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 दिसंबर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जेपी सांडर्स को मारा। इस कार्रवाई में क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद ने भी उनकी पूरी सहायता की। इसके बाद भगत सिंह ने अपने क्रांतिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर अलीपुर रोड़ दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेंट्रल असेंबली के सभागार में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज सरकार को जगाने के लिए बम और पर्चे फेंके। बम फेंकने के बाद वहीं पर उन दोनों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी।

लाहौर षडयंत्र-:

इसके बाद 'लाहौर षडयंत्र' के इस मुकदमें में भगत सिंह को और उनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव को 23 मार्च, 1931 को एक साथ फांसी पर लटका दिया गया। यह माना जाता है कि मृत्यु दंड के लिए 24 मार्च की सुबह ही तय थी, लेकिन लोगों के भय से डरी सरकार ने 23-24 मार्च की मध्यरात्रि ही इन वीरों की जीवनलीला समाप्त कर दी और रात के अंधेरे में ही सतलज के किनारे उनका अंतिम संस्कार भी कर दिया।

*यह एक संयोग ही था कि जब उन्हें फांसी दी गई और उन्होंने संसार से विदा ली, उस वक्त उनकी उम्र 23 वर्ष 5 माह और 23 दिन थी और दिन भी था 23 मार्च। अपने फांसी से पहले भगत सिंह ने अंग्रेज सरकार को एक पत्र भी लिखा था, जिसमें कहा था कि उन्हें अंग्रेजी सरकार के खिलाफ भारतीयों के युद्ध का प्रतीक एक युद्धबंदी समझा जाए तथा फांसी देने के बजाए गोली से उड़ा दिया जाए, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

*भगत सिंह जी की शहादत से न केवल अपने देश के स्वतंत्रता संघर्ष को गति मिली बल्कि नवयुवकों के लिए भी वह प्रेरणा स्रोत बन गए। वह देश के समस्त शहीदों के सिरमौर बन गए। भारत की जनता उन्हें आजादी के दीवाने के रूप में देखती है जिसने अपनी जवानी सहित सारी जिंदगी देश के लिए समर्पित कर दी।

*भगत सिंह जी भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी क्रांतिकारी थे। आज भी सारा देश उनके बलिदान को बड़ी गंभीरता व सम्मान से याद करता है. ,

उस समय के अंग्रेज अधिकारी भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव जैसे वीरों की निडरता देखकर अचंभित रह गये, और इन क्रांतिवीरों की निडरता व साहस के कारण अंग्रेजी हुकूमत के अधिकारी भय के कारण हिंदुस्तान में रहना नहीं चाहते थे।

देश की आजादी के समय काफी अंग्रेज अधिकारियों ने स्वीकार किया कि भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु, बिस्मिल और सुभाष चंद्र बोस जैसे निडर क्रांतिकारियों की वजह से भारत छोड़ना पड़ा।।

महान क्रांतिकारी वीर भगत सिंह जी के भारत देश की भूमि पर जन्म के लिए उन्हें शत्-शत् नमन।

ऑल कैडर पेंशनर्स एसोसिएशन की बैठक संपन्न

अमृतसर (साहिल बेरी) ऑल कैडर पेंशनर्स एसोसिएशन के वरिष्ठ कार्यकारी अभियंता मनोहर सिंह जी उपस्थित रहे जिसमें प्रदेश नेता हरभजन सिंह झंझोटी, प्रमोद कुमार, जितिंदर लखनपाल नरिंदर पाल, जितिंदर कुमार सर्कल अध्यक्ष रमेश भसीन, रतन सिंह घई शामिल हुए। बैठक में पेंशनधारियों की समस्या एवं सशुल्क कार्यालय कार्यों पर चर्चा की गयी.कार्यपालक अभियंता ने सभी कार्यों को शीघ्र पूरा करने का आश्वासन दिया।

संगम यूनिवर्सिटी के छात्र प्रद्युम्न तिवारी का प्लेसमेंट अबू धाबी के जिंदल सॉ गल्फ़ में

अनूप कुमार शर्मा भीलवाडा

भीलवाड़ा। स्थानीय संगम विश्वविद्यालय के कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष डॉ. विकास सोमानी ने बताया की प्रद्युम्न आठवें सेमेस्टर में जिंदल सॉ भीलवाड़ा से ट्रेनिंग ले रहा था, ट्रेनिंग के दौरान ही उसके कुशल कार्य को देखते हुवे उसे अबू धाबी जाने का ऑफर जिंदल गल्फ़ के मैनेजिंग डायरेक्टर ने दिया है।

इंजीनियरिंग विभाग के डीन डॉ आर के सोमानी ने कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग में लगातार प्लेसमेंट और एचीवमेंट को देखते हुवे सभी फैकल्टी और प्रद्युम्न तथा उसके माता पिता को बधाई दी ।प्रो प्रेजिडेंट मानस रंजन तथा रजिस्ट्रार प्रोफेसर राजीव मेहता ने कंप्यूटर साइंस के फैकल्टी को सराहा तथा प्रोफेसर मेहता ने बताया की इसी वर्ष कंप्यूटर साइंस के छात्र नमन व्यास को मिनिस्ट्री ऑफ़ माइक्रो स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइज द्वारा 15 लाख के प्रोजेक्ट मिले है, जिससे कंप्यूटर साइंस के फैकल्टी के कौशल कार्य अनुभव को दर्शाता है, यूनिवर्सिटी एवं यूनिवर्सिटी मैनेजमेंट हमेशा छात्रों को अच्छा प्लेटफार्म देने के लिए तैयार हैं।

प्रेसिडेंट प्रोफेसर करुणेश सक्सेना नें प्रद्युम्न के अबू धाबी में प्लेसमेंट के लिए उसके माता-पिता को बधाई दी तथा उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की !प्रद्युम्न के पिता श्री रघुनन्दन तिवारी एवं माता श्रीमति सुनीता तिवारी ने, संगम यूनिवर्सिटी तथा कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग के सभी स्टाफ को इस प्लेसमेंट के लिये धन्यवाद व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री ने सदन से सीधे विपक्ष पर निशाना

मनोरंजन सासमल , ओडिशा

भुबनेस्वर। बिधानसभा में गृह विभाग की व्यय मांगों पर चर्चा के दौरान मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने विपक्ष पर निशाना साधा. मुख्यमंत्री ने बयान देते हुए उनकी आलोचना की. जो लोग जनता के लिए काम कर रहे हैं वो घर में हैं. और जो लोग अपराध को लेकर राजनीति कर रहे हैं, वो घर नहीं आ सकते.लोग विकास में बाधा डालने के लिए विपक्ष का इस्तेमाल देख रहे हैं। मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने कहा कि राज्य सरकार नये ओडिशा के लिए काम कर रही .

कल विधानसभा में विपक्षी दल के सदस्यों के बीच जमकर मारपीट हुई. बीजेपी विधायकों ने मंच पर दाल फेंकी. बाद में बीजेपी के दो विधायकों को विधानसभा से निलंबित कर दिया गया. स्पीकर

प्रमिला मल्लिक को मौजूदा सत्र के अंत तक निलंबित कर दिया गया है. ऐसी घटना के बाद स्पीकर ने सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी.

भागचंद पाटनी सम्मानित हुए। भीलवाडा श्री महावीर दिगंबर जैन सेवा समिति हाउसिंग बोर्ड द्वारा मीडिया प्रभारी भागचंद पाटनी का उनकी उत्कृष्ट सेवाओं तथा विकास कार्यो के लिए माला पगड़ी तथा दुपट्टा पहना कर अभिनंदन किया साथ ही उनका इसी तरह समाज को सहयोग मिलता रहे इसी आशा के साथ उनके उज्वल भविष्य की कामना की।

भाजपा महिला मोर्चा का जिला महिला सम्मेलन होगा 10 अक्टूबर को

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। भाजपा महिला मोर्चा द्वारा जिला महिला सम्मेलन 10 अक्टूबर को आयोजित होगा,इस हेतु भीलवाड़ा जिले के सभी मंडलों में तैयारी बैठक की जाएगी जिसके तहत आज शास्त्री मंडल में महिला मोर्चा ने तैयारी बैठक की, बैठक भाजपा जिला अध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा के निर्देशानुसार जिला अध्यक्ष महिला मोर्चा मंजू पालीवाल के नेतृत्व में शास्त्री मंडल महिला मोर्चा अध्यक्ष इंदु की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन संयोजक अनुराधा कवंर एवं महिला सम्मेलन सहसंयोजक नेहा नागर के सानिध्य में आज शास्त्री मंडल में आगामी कार्यक्रम महिला सम्मेलन के विषय पर चर्चा की गई इस कार्यक्रम को सुंदर व सुदृढ़ बनाने के लिए मंडल स्तर पर बैठक ली गई भाजपा जिला मीडिया प्रभारी महावीर समदानी ने बताया कि इस बैठक में जिला महामंत्री मीनाक्षी नाथ, जिला उपाध्यक्ष रेखा शर्मा ,अनीता शर्मा ,मेघा शर्मा ,बेबी राठौड़ ,सोनू पारीक जानवी तनवानी, दिव्या भगत ,पूनम मिरचंदानी, कमला आसवानी, सुनीता गुप्ता रितिका पारीक, रीना खोईवाल आदि महिला उपस्थित रही।

हम लोगों की दया पर आए हैं, अगर लोग दयालु होंगे तो हम फिर आएंगे। कौन जीतेगा और कौन हारेगा यह नवीन पर निर्भर नहीं:बिरोधी दल नेता श्री जयनारायण मिश्र

मनोरंजन सासमल , ओड़िशा

भुबनेश्वर : अपराध पर राजनीति करने वाले और विकास में बाधा उत्पन्न करने वाले नेता कभी विधानसभा में नहीं लौट सकते। मुख्यमंत्री के कल विधानसभा में दिये गये बयान पर नेता प्रतिपक्ष जयनारायण मिश्र ने प्रतिक्रिया दी है. जयनारायण ने कहा, 'इससे साफ है कि मुख्यमंत्री धमकी देना चाह रहे हैं कि जो मेरा विरोध करेगा वह विधानसभा में नहीं आ सकेगा.' वह पहले भी कई बार कोशिश कर चुका है. लेकिन यहां जनविरोधी कौन है? नवीन पटनायक सबसे बड़े जनविरोधी व्यक्ति बन गये. नवीन पटनायक विकास में सबसे बड़े बाधक हैं. वह विधानसभा में कैसे लौटेंगे, इस पर विचार करें. ऐसा लगता है कि उन्होंने जनविरोधी काम किया है और विधानसभा में नहीं लौटेंगे.

इसके अलावा जयनारायण ने कहा कि कौन जीतता है और कौन हारता है

यह मुख्यमंत्री पर निर्भर नहीं करता है. हो सकता है कि वह बूथ कैप्चरिंग, आधिकारिक रंगों का बड़े प्रभाव से उपयोग कर रहा हो। उसके बावजूद हम विधानसभा आये हैं. हम लोगों की दया पर आये हैं, उनकी दया पर नहीं। लोगों की फिर दया हुई तो हम आएंगे।' शायद वह कोशिश कर सकते हैं कि हम विधानसभा में कैसे न लौटें. वे 2009 से योजना बना रहे हैं। नवीन पटनायक विधानसभा में अपने खिलाफ बोलने वालों को मारने की कोशिश करते हैं.

इतना ही नहीं जयनारायण ने वाचस्पति पर भी निशाना साधा है. जयनारायण ने कहा, स्पीकर के पास स्पीकर बनने की योग्यता नहीं है. क्या उन्हें विधायी नीति और नियमों के बारे में कुछ पता है? विधानसभा में विपक्षी दल के नेता से बात न करना, उसका माइक्रोफोन काट देना, पक्षपात करना किस कानून में लिखा है? उन्होंने हमारे दो विधायकों को निष्कासित कर दिया है, हम कल पुरजोर विरोध करेंगे. डाली तो गोटे का प्रतीक मात्र थी। हमारे विधायकों ने दाल नहीं फेंकी है, हमने तोहफे दिये हैं. संख्या की श्रेष्ठता से अंधा होकर यदि वह हाथी की तरह शारीरिक बल से उन्मत्त हो जाए तो उसे पकड़ने के लिए गधों का प्रयोग किया जाएगा। जयनारायण ने पूछा कि क्या वे वही करेंगे जो वे नहीं करते क्योंकि उनके पास बहुमत है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 98117320959.
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। Title Code : DELHIN28985. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023